अध्याय 24

इसहाक के लिए पत्नी

जब अब्राहम अपने लम्बे और विशेष घटनाओं से भरे जीवन के अंत तक पहुंच चुका, तो उसने अपने परिवार की खुशहाली की व्यवस्था कर दी थी, विशेषकर अपने पुत्र इसहाक की। इसहाक के द्वारा ही परमेश्वर की महान प्रतिज्ञा पूरी होनी थी, और अब्राहम को यह निश्चित करना होगा की उसकी पत्नी सही हो, और जो उन अनगिनत वंशजों का प्रबंध कर सके जिनके बारे में परमेश्वर ने कहा था (22:17)। अब्राहम यह आश्वासन चाहता था की उसके पोते पोतियों की विरासत अधर्मी कनानियों के साथ मिश्रित न हो जाए।

अब्राहम का अपने दास को आदेश (24:1-9)

[1]अब्राहम अब वृद्ध हो गया था और उसकी आयु बहुत थी और यहोवा ने सब बातों में उसको आशीष दी थी। [2]अब्राहम ने अपने उस दास से, जो उसके घर में पुरनिया और उसकी सारी संपत्ति पर अधिकारी था, कहा, "अपना हाथ मेरी जाँघ के नीचे रख; [3]और मुझसे आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की इस विषय में शपथ खा की तू मेरे पुत्र के लिए कनानियों की लड़कियों में से, जिनके बीच मैं रहता हूँ, किसी को न लाएगा। [4]परन्तु तू मेरे देश में मेरे ही कुटुम्बियों के पास जाकर मेरे पुत्र इसहाक के लिए एक पत्नी ले आएगा।" [5]दास ने उससे कहा, "कदाचित् वह स्त्री इस देश में मेरे साथ आना न चाहे; तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहाँ से तू आया है ले जाना पड़ेगा?" [6]अब्राहम ने उससे कहा, "चौकस रह, मेरे पुत्र को वहाँ कभी न ले जाना। [7]स्वर्ग के परमेश्वर यहोवा, जिसने मुझे मेरे पिता के घर से और मेरी जन्म-भूमि से ले आकर मुझसे शपथ खाई और कहा की मैं यह देश तेरे वंश को दूँगा, वही अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा की तू मेरे पुत्र के लिए वहाँ से एक स्त्री ले आए। [8]परन्तु यदि वह स्त्री तेरे साथ आना न चाहे तब तो तू मेरी शपथ से छूट जाएगा; पर मेरे पुत्र को वहाँ न ले जाना।" [9]तब उस दास ने अपने स्वामी अब्राहम की जाँघ के नीचे अपना हाथ रखकर उससे इस विषय की शपथ खाई।

आयत 1. बाइबलीय लेखक ने दर्ज किया की **अब्राहम वृद्ध हो गया था** और **उसकी आयु बहुत थी**। इस तरह का कथन विशेषकर ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयोग किया जाता था जो मृत्यु के निकट होता था (यहोशू 13:1; 23:1; 1 राजा 1:1)।

परन्तु इस वृद्ध कुलपति के मामले में ऐसा कुछ भी नहीं था। इस अध्याय के अंत में अब्राहम के पुत्र इसहाक ने रिबका से विवाह कर लिया (24:67); और अध्याय 25 हमें सूचित करता है की जब यह हुआ तब वह चालीस वर्ष का था (25:20)। क्योंकि अब्राहम इसहाक के जन्म के समय एक सौ वर्ष का था (21:5), तो वह उस समय 140 वर्ष से अधिक नहीं हो सकता जब इसहाक और रिबका पति और पत्नी बने। इसके अतिरिक्त, लेखक ने अपने कथानक के विवरण में यह सम्मिलित किया है की इन घटनाओं के बाद अब्राहम और अधिक पैंतीस वर्ष जीवित रहा, और फिर 175 वर्ष की आयु में उसकी मृत्यु हुई (25:7)।

विवरण आगे बताता है कि **यहोवा ने अब्राहम को सब बातों में आशीष दी थी**। परमेश्वर ने कुलपति को आत्मिक रूप से आशीष दी थी अपने आपके साथ वाचा में बाँध कर और उसके जीवन को अर्थ, उद्देश्य और आशा देकर। उसने अब्राहम को भरपूर बाहरी आशीष दी थी: शत्रुतापूर्ण देश में सुरक्षा, अत्यधिक धन (सोना और चांदी, भेड़ बकरियों के झुण्ड, और सैकड़ों सेवक), एक विश्वसनीय पत्नी, और इसहाक, जो की वाचा की संतान था। बिलकुल, इनमें से कुछ आशीषें भविष्य के लिए थीं; आकाश के तारागण जैसा वंश (15:5, 6), अभी कुछ पीढ़ी बाद में आने वाले थे, और कनान की भूमि (15:12-21) प्राप्त करना भी अभी हुआ नहीं था। परन्तु, इन लक्ष्यों को ध्यान में रखते हुए, उस कुलपति को अपनी वृद्ध आयु में आभास हुआ कि इसहाक के विवाह की तैयारी करने का समय आ गया है। वह आने वाली पीढ़ियों के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञाओं को जीवित रखेगा।

आयत 2. इसीलिए **अब्राहम** ने अपने सबसे भरोसेमंद **दास**[1] को बुलाया, **जो उसके घर में पुरनिया और उसकी सारी सम्पत्ति पर अधिकारी था**। वह दास दमिश्कवासी एलिएजेर (15:2-4) था या कोई अन्य व्यक्ति, हम निश्चित रूप से कह नहीं सकते; इस विवरण में उसका नाम नहीं दिया गया है। अध्याय 15 की घटनाओं को घटाकर अब अंदाज़न 75 वर्ष बीत चुके थे, तो एलिएजेर शायद इस समय कम से कम पचहत्तर वर्ष का था। फिर भी, यह आवश्यक नहीं की हारान की एक यात्रा उसके लिए असंभव हो सकती थी, क्योंकि कुलपति के युग में लोग लम्बे समय तक जीवित रहते थे। अब्राहम ने भी इतनी ही दूरी विपरीत दिशा में पचहत्तर वर्ष की आयु में तय की थी (12:4)। जो भी था, उसने अपने सबसे विश्वसनीय दास को बुलवाया, जो उसके सम्पूर्ण मामलों का अधिकारी था, इस महत्वपूर्ण मिशन पर जाने के लिए।

अपने दास को इस काम की गंभीरता समझाने के लिए, अब्राहम उसे यह निर्देश देता है: **"अपना हाथ मेरी जाँघ के नीचे रख।"** "जाँघ" के लिए इब्रानी शब्द है (יָרֵךְ, *यारेक)* जिसका अनुवाद "कूल्हा" भी हो सकता है। उस दास को अब्राहम के शरीर को स्पर्श करना था क्योंकि उसी में से प्रतिज्ञा किए हुए वंशज निकलेंगे। ("उसके कूल्हों में से"; देखें 46:26 [KJV]; निर्गमन 1:5)।[2] कुलपति के अपने दास से इस प्रकार के प्रतीकात्मक चिन्ह की मांग का कारण यह था की भविष्य की पीढ़ियों के लिए परमेश्वर की प्रतिज्ञा इसहाक के लिए सही पत्नी होने पर

निर्भर था। केवल इसी प्रकार की वंश वृद्धि से उनके वंशज अब्राहम के बीज को आगे बढ़ा कर एक महान राष्ट्र बनेंगे और पृथ्वी के सारे परिवारों के लिए आशीष ठहरेंगे, प्रभु की प्रतिज्ञा के अनुसार। बाद में, याकूब ने इसी तरह के गंभीर संस्कार के लिए यूसुफ़ पर ज़ोर डाला, यह निवेदन करते हुए की उसका पुत्र उसे मकपेला की गुफ़ा में दफ़नाए, उनके बीच में जिनसे उसे जीवन प्राप्त हुआ था (47:29-31)। याकूब निश्चित रूप से जानता था की कनान, ना कि मिस्र, प्रतिज्ञा का वह देश है जिसमें एक दिन उसके वंशज लौट कर जाएंगे।

आयतें 3, 4. इस गंभीर कृत्य के साथ, कुलपति ने अपने दास से वचन भी लिया, उसे **आकाश और पृथ्वी के परमेश्वर यहोवा की शपथ** खिलाई। शपथ की शुरुआत का यह उचित तरीका था क्योंकि यह विश्वस्त को स्मरण कराएगा की उसके स्वामी का परमेश्वर केवल कोई स्थानिक देवता नहीं था। वह दूर देश एक जोखिम भरी यात्रा पर जाने को था, उसमें आत्मविश्वास रह सकता था की प्रभु - स्वर्ग का सम्राट निर्माता और स्वर्ग और पृथ्वी को और जो कुछ उसमें है उसे सँभालने वाला - उसकी रक्षा करेगा। इसके अतिरिक्त, प्रभु के नाम में शपथ खाना इस मिशन की गंभीरता को और शपथ की बाध्यकारी प्रकृति को बल देता है (देखें 14:22-24)।

अब्राहम की दास से यह मांग थी की वह इसहाक के लिए **कनानियों की लड़कियों में से**, जिनके बीच वे रहते थे, **किसी को न लाएगा**। ये लोग अपनी घोर मूर्तिपूजा और व्यभिचार के लिए जाने जाते थे, और वे श्राप के नीचे थे (9:24-27; 15:16)। इसके बजाय दास को अब्राहम के **देश** में (हारान; 12:1, 4)। और उसके **कुटुम्बियों** (11:27-32; 22:20-24) के पास जाना था, उसके **पुत्र इसहाक के लिए स्त्री** लाने को लिए। इसहाक के लिए अच्छी पत्नी प्राप्त करने के द्वारा, अब्राहम परमेश्वर की इच्छा पूरी कर रहा था की कुलपति "अपने पुत्रों और परिवार को, जो उसके पीछे रह जाएंगे, आज्ञा देगा की वे यहोवा के मार्ग में अटल बनें रहें, और धर्म और न्याय करते रहें" (18:19)।

आयत 5. इस मिशन की गंभीरता के कारण, उस **दास** ने स्पष्टीकरण माँगा। यदि किसी समस्या ने उसे उसके स्वामी के ठोस आदेश को करने से रोका, तो क्या कार्य को पूरा करने का कोई और विकल्प होगा? यह निश्चित करने के लिए की वह अपना काम समझ गया है, उस दास ने पूछा, **"कदाचित वह स्त्री इस देश में मेरे साथ आना न चाहें; तो क्या मुझे तेरे पुत्र को उस देश में जहाँ से तू आया है ले जाना पड़ेगा?"** दास एक संभावित समस्या का अनुमान लगा रहा था।

आयत 6. अपने दास के प्रति उस कुलपति ने प्रतिक्रिया एक दृढ़ आपत्ति के रूप में की: **"चौकस रह, मेरे पुत्र को वहाँ कभी न ले जाना!"** उसे अनुभव हुआ की वह युवती और उसका पिता उस दास के प्रस्ताव को ठुकरा सकते हैं। वह उससे वे करने की सम्मति माँग रहा था जो करना स्वयं **अब्राहम** को भी कठिन लगा था: अपने घर और कुटुम्बियों को छोड़ कर अनजान और दूर देश की यात्रा पर निकलना (12:1)। वास्तव में, यदि वह इस अजनबी के साथ आने का निर्णय लेती है, तो शायद वह अपने परिवार को दोबारा कभी मिल न सके। इसहाक

प्रतिज्ञा को देश में अपने घर को छोड़ नहीं सकता था ताकि अपनी पत्नी से एक हो सके; इसके विपरीत उस दास की ज़िम्मेदारी थी उस युवती से, अपने पिता को, माता को, संबंधियों को, मित्रों को, और उस सब को जिससे वह परिचित थी, छोड़ने को कहना, ताकि वह एक ऐसे पति के साथ जीवन व्यतीत कर सके जिसे वह पहले कभी नहीं मिली।

आयत 7. अब्राहम जानता था की उसके दास के सामने भयंकर रुकावटें हैं। कुलपति ने अपने स्वयं के अनुभव को दोहराया, यह ज़ोर देते हुए की वह **स्वर्ग का परमेश्वर यहोवा** (था), जो (उसे उसके) **पिता के घर से और** [उसकी] **जन्म-भूमि से ले आया था।** "उसकी जन्म-भूमि शायद कसदियों के ऊर की ओर संकेत करती है, अब्राहम की जन्म-भूमि के रूप में (11:31; प्रेरितों 7:2, 3),[3] या फिर सामान्य रूप से यह मेसोपोटामिया का उल्लेख होगा। तेरह के परिवार के ऊर से चले जाने के कई वर्षों बाद, अब्राहम ने हारान में अपने "पिता का घर" छोड़ा कनान में आने के लिए (12:1, 4)। वह कनान के **देश** में था क्योंकि परमेश्वर ने उसे उसके **वंशजों** को देने की प्रतिज्ञा की थी, एक अनंत संपत्ति के रूप में (13:14, 15; 15:18-21)। अपने अतीत को दोहराने के द्वारा, उस कुलपति ने अपने दास को आश्वस्त किया की वह एक ऐसे कारोबार में कार्यरत था जिसमें मात्र किसी मनुष्य का प्रयास नहीं था। वह एक दैवी मिशन था जिसकी शुरुआत कई वर्षों पूर्व परमेश्वर की बुलाहट से हुई थी। जिस तरह परमेश्वर ने अब्राहम का मार्गदर्शन किया था **वही अपना दूत उसके आगे आगे भेजेगा।**

अब्राहम आश्वस्त था की परमेश्वर इस दास का मार्गदर्शन सही स्थान के लिए करेगा और उसी स्त्री की ओर जो इसहाक की उचित **पत्नी** होगी। क्योंकि परमेश्वर ने अतीत में अब्राहम और उसके परिवार का मार्गदर्शन करने के लिए स्वर्गदूत भेजे थे (16:7-13; 18:1-22; 21:17, 18; 22:11-18), वह हारान की यात्रा में इस दास की अध्यक्षता भी अवश्य करेगा।

आयत 8. दास को उस **स्त्री** से अपना प्रस्ताव मनवाने की लिए उसपर दबाव नहीं डालना था। ना ही उसे परमेश्वर से यह अपेक्षा करनी है की वह उसकी स्वेच्छा को रद्द करेगा या उसका प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए उसपर दबाव डालेगा। ऐसी स्थिति में, यदि वह **साथ आना न चाहे**, तो दास अपनी **शपथ** से स्वतन्त्र हो जाएगा। इस सारे कथन के बाद, कुलपति ने अपने निर्देश को पूरा किया। केवल एक स्पष्ट शर्त थी: यदि वह स्त्री दास के साथ आने से इनकार करती है, तो वह इसहाक को वहाँ ले जाकर उस स्थिति को बचाने का प्रयास नहीं करेगा। अब्राहम का दृढ़ आदेश था **"पर मेरे पुत्र को वहाँ न ले जाना।"** कनान वह स्थान था जहाँ परमेश्वर चाहता था की वह और इसहाक रहे, और अब अब्राहम ने परमेश्वर की इच्छा मानने की ठान ली थी।

आयत 9. कुलपति ने दास को निर्देश देना यह कहकर समाप्त किया कि यदि वह स्त्री उसके साथ कनान न आना चाहे तो वह अपने ज़िम्मेदारी से छूट जाएगा। अब केवल एक ही बात होना बाकी रह गया था कि **अपने स्वामी अब्राहम की जाँघ के नीचे अपना हाथ रखकर उससे इस विषय की शपथ** खाए कि वह इस

कार्य को पूरा करेगा।

परमेश्वर की अगुआई के लिए दास का प्रार्थना (24:10-14)

[10]तब वह दास अपने स्वामी के ऊँटो में से दस ऊँट छांटकर उसके सब उत्तम उत्तम पदार्थों में से कुछ कुछ ले कर चला: और मेसोपोटामिया में नाहोर के नगर के पास पहुँचा। [11]और उसने ऊँटों को नगर के बाहर एक कुएं के पास बैठाया, वह संध्या का समय था, जिस समय स्त्रियां जल भरने के लिये निकलती हैं। [12]सो वह कहने लगा, हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर, यहोवा, आज मेरे कार्य को सिद्ध कर और मेरे स्वामी अब्राहम पर करुणा कर। [13]देख मैं जल के इस सोते के पास खड़ा हूँ और नगरवासियों की बेटियां जल भरने के लिये निकली आती हैं: [14]सो ऐसा होने दे, कि जिस कन्या से मैं कहूँ, कि अपना घड़ा मेरी ओर झुका, कि मैं पीऊँ और वह कहे, कि ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊंटो को भी पीलाऊँगी: सो वही हो जिसे तू ने अपने दास इसहाक के लिये ठहराया हो; इसी रीति मैं जान लूंगा कि तू ने मेरे स्वामी पर करुणा की है।

आयत 10. दास ने अपने **स्वामी** के ऊँटों में से **दस ऊँट** छांटे। तब उसने नाहोर के नगर तक यात्रा करने के लिए एक महीने की यात्रा के हिसाब से उन पर सामग्री लादी। **नाहोर के नगर** का तात्पर्य यह है कि उस समय कोई नगर रहा होगा जिसका नाम नाहोर हो, परंतु संभवतः यह उत्तर पश्चिम **मेसोपोटामिया**[4] के हारान की ओर संकेत करता है जहाँ नाहोर और उसका परिवार रहता था (देखें 11:31; 27:43; 28:10; 29:4)। भोजन वस्तु के अलावा ऊँटों को सोने, चांदी एंव अन्य कीमती आभूषण भी ढोने थे जो प्राचीन पश्चिम एशिया के संस्कृति के नियमानुसार दुल्हन को भेंट स्वरूप प्रदान किए जाते थे (24:22, 53)। इसके अलावा दास ने अन्य दासों को भी साथ लिया जिनका वर्णन बाद के अनुच्छेदों में पाया जाता है (24:32, 54, 59)। ये दास इसलिए भी आवश्यक थे कि वे अब्राहम के दास की ऊँटों की देखभाल कर सके, उसको सुरक्षा प्रदान करे और डाकूओं और लुटेरों से दुल्हन को इनाम देने की आभूषणों तथा खाने पीने की सामान की भी रक्षा कर सके।

कुछ विद्वानों ने ऊँटों के संदर्भ को इस अनुच्छेद में अनुपयुक्त बताया है। उनका मानना है कि द्वितीय सहस्राब्दी के अंतिम युग तक ऊँटों के पालन का प्रचलन नहीं था। इस पूर्वधारणा के आधार पर, उनका मानना है कि उत्पत्ति प्रथम सहस्राब्दी की रचना है अतः अब्राहम के समय ऊँटों का प्रयोग प्रचलन में नहीं था। यह सत्य है कि कनान में अब्राहम के समय ऊँटों का प्रयोग के बारे में बाहरी प्रमाण अपर्याप्त है, जबकि पुरातत्व वैज्ञानिकों ने कई स्थानों में ऊँटों की हड्डियों खोजी हैं जिनकी तिथि लगभग इसी काल की बतायी जाती है।[5] वास्तव में ऊँट पालन का प्रमाण 2700 ई.पू. में ईरान में पाया जाता है और इसके बाद इसके पालन का प्रचलन द्वितीय सहस्राब्दी के प्रारंभ में मेसोपोटामिया और अरब

में पाया जाता है।[6] अब्राहम जैसे धनी व्यक्ति ही इस प्रकार के उपयोगी जानवरों का झुण्ड रख सकता था जबकि समान ढुलवाने के लिए गधे जैसे साधारण जानवरों का प्रयोग भी उत्पत्ति में पाया जाता है (22:3; 42:26, 27; 45:23)।

आयत 11. वर्ष के ठंडे महीनों में भी कनान से उस नगर तक जहाँ नाहोर रहता था, की यात्रा कठिन तथा थकाने वाला था। कोई भी ऋतु क्यों न हो, चाहे मनुष्य हो या जानवर, हारान तक की यात्रा तय करने के पश्चात थक जाता था। परिणामस्वरूप, दास ने **ऊँटों को नगर के बाहर कुएँ के समीप ठहराया**।

मूलपाठ हमें यह नहीं बताता है कि दास को यह कैसे पता था कि उसे कहाँ जाना है। क्या उस स्वर्गदूत की कोई आवाज़ उसे सुनाई दी जिसके विषय उसके स्वामी ने उससे कहा था (24:7) कि वह उसे उस स्थान तक ले जाएगा? जो भी कारण हो, वह लंबी यात्रा करके थका मांदा वहाँ पहुँचा था; फिर भी उसने अपने ऊँटों को पानी पिलाने का प्रयास नहीं किया। इसका यह कारण था कि दिन ढल चुका था और **सांझ** ठंडी हो गई थी और तापमान भी गिर चुका था और वह जानता था कि वहाँ की **स्त्रियाँ** - विशेषकर अविवाहित युवतियाँ - जल्द ही **जल भरने के** लिए कुएँ पर आएंगी (देखें 1 शमूएल 9:11)। क्योंकि उसका कार्य यह था कि उसको इसहाक के लिए योग्य वधु ढूँढना था तो इस कार्य के लिए नगर के बाहर इस कुएँ के अलावा कोई दूसरा उचित स्थान नहीं था।[7]

आयत 12. इस अवसर पर, दास गंभीरतापूर्क अपने **स्वामी अब्राहम** की ओर से **यहोवा** से प्रार्थना करने लगा। यह कार्य इस बात को दर्शाता है कि कुलपति ने एक सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करने की आशीष को अपने दास पर प्रगट किया था। उसका यह प्रार्थना था कि वह अपने स्वामी के पुत्र इसहाक के लिए एक योग्य वधू ढूँढ सके। इससे बढ़कर, उसने इस बात का संकेत दिया कि परमेश्वर उसकी विनती को स्वीकार कर, अब्राहम पर अपनी **करुणा** (חֶסֶד, *चेसेद)* प्रगट करेगा।

आयत 13. दास ने जवान युवती का चरित्र, विशेषकर उसके पहुनाई करने की क्षमता की परीक्षा करने की युक्ति सोची। उसको इसहाक, जिसका पिता कनान में विदेशियों की पहुँनाई करने का एक आदर्श है, से विवाह करने की अनुरूपता दिखानी होगी (18:1-8)। दास ने कहा कि **वह जल के सोते के पास खड़ा है** जहाँ **नगरवासियों की बेटियां जल भरने के लिये निकली आती हैं**। मूल पाठ में "कुआँ" (בְּאֵר, *बेअर;* 24:11, 20) का संदर्भ दिया गया है; जिसमें जल, सोते (עַיִן, *आईन,* 24:13, 16) से आता था। यहीं पर जवान युवतियाँ अपने घड़े में जल भरने के लिए आतीं थीं। अपने घड़े में जल भरने के बाद, वे उसको एक नाली में जानवरों के लिए उँडेलतीं थीं।

आयत 14. अब्राहम का दास का युवती की परीक्षा का अभिप्राय एक थके मांदे यात्री का केवल सामान्य पहुनाई ही नहीं करवाना था बल्कि उसके यह कहने पर कि वह **अपना घड़ा** उसकी ओर **झुकाए** ताकि वह जल **पी** सके और वह उससे यह कहला सके कि **ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी**। क्योंकि एक ऊँट लगभग पच्चीस गैलन जल पी सकता है और अब्राहम के दास दस ऊँटों के साथ यात्रा कर रहे थे तो उसको बहुत अधिक जल (250 गैलन) भरना पड़ता।

इस प्रकार की जवान युवती अदभुत होगीः जो दयालु है, अतिथि सत्कार जानती हो, परिश्रमी हो और जो एक वृद्ध अजनबी की सहायता करने के लिए तत्पर हो। दास ने युवती की इस प्रकार की परीक्षा करने की युक्ति जानबूझकर सोची ताकि वह **इसहाक** के लिए उचित पत्नी ढूँढने में कोई गलती न करे और उसकी इच्छा कि वह अपने **स्वामी** के लिए परमेश्वर की **करुणा** का गवाह बन जाए।[8]

रिबका का कुएँ पर आगमन (24:15-27)

[15]और ऐसा हुआ कि जब वह कह ही रहा था कि रिबका, जो इब्राहीम के भाई नाहोर के जन्माये मिल्का के पुत्र, बतूएल की बेटी थी, वह कन्धे पर घड़ा लिये हुए आई। [16]वह अति सुन्दर, और कुमारी थी और किसी पुरुष का मुंह न देखा था: वह कुएं में सोते के पास उतर गई और अपना घड़ा भर के फिर ऊपर आई। [17]तब वह दास उससे भेंट करने को दौड़ा और कहा, अपने घड़े में से थोड़ा पानी मुझे पिला दे। [18]उसने कहा, हे मेरे प्रभु, ले, पी ले: और उसने फुर्ती से घड़ा उतार कर हाथ में लिये लिये उसको पिला दिया। [19]जब वह उसको पिला चुकी, तक कहा, मैं तेरे ऊंटों के लिये भी तब तक पानी भर भर लाऊंगी, जब तक वे पी न चुकें। [20]तब वह फुर्ती से अपने घड़े का जल हौदे में उण्डेल कर फिर कुएं पर भरने को दौड़ गई; और उसके सब ऊंटों के लिये पानी भर दिया। [21]और वह पुरुष उसकी ओर चुपचाप अचम्भे के साथ ताकता हुआ यह सोचता था, कि यहोवा ने मेरी यात्रा को सफल किया है कि नहीं। [22]जब ऊंट पी चुके, तब उस पुरुष ने आध तोले सोने का एक नथ निकाल कर उसको दिया और दस तोले सोने के कंगन उसके हाथों में पहिना दिए; [23]और पूछा, तू किस की बेटी है? यह मुझ को बता दे। क्या तेरे पिता के घर में हमारे टिकने के लिये स्थान है? [24]उसने उत्तर दिया, मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं। [25]फिर उस ने उस से कहा, हमारे यहां पुआल और चारा बहुत है और टिकने के लिये स्थान भी है। [26]तब उस पुरुष ने सिर झुका कर यहोवा को दण्डवत करके कहा, [27]धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, कि उसने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया: यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चला कर मेरे स्वामी के भाई बन्धुओं के घर पर पहुंचा दिया है।

आयत 15. परमेश्वर से **जब** [दास] **कह ही रहा था** कि रिबका कुएँ के पास आ गई। उत्पत्ति के लेखक का वर्णन, अब्राहम के दास की विनती के प्रति ईश्वरीय अनुकम्पा दर्शाता है। परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ कई वर्षों के बाद जो प्रतिज्ञा की, "उनके पुकारने से पहिले ही मैं उन को उत्तर दूंगा, और उनके मांगते ही मैं उनकी सुन लूंगा" (यशा. 65:24), उसे वह अभी से ही पूरा कर रहा था।

कथावाचक ने रिबका की वंशावली को उसके सौंदर्य या चरित्र का बखान करने से पहले ही स्पष्ट कर दिया। अब्राहम की शर्त यह थी कि इसहाक की पत्नी उसी के ही संबंधियों में से होनी चाहिए (24:4)। इसलिए, मूलपाठ सबसे पहले

उसके पिता, **बतूएल** की पहचान करता है और उसके बाद उसकी दादी **मिल्का**, जो **अब्राहम के भाई नाहोर की पत्नी** थी, का परिचय कराता है (देखें 11:27, 29; 22:20-23)। युवती नगर से अपने **कंधे पर घड़ा लिए हुए** जल भरने की इच्छा से **आई**।

आयत 16. मूलपाठ यह बताता है कि रिबका **अति सुंदर** थी और उसने किसी पुरुष का मुँह नहीं देखा था और वह **कुमारी** थी। यह वक्तव्य कि उसने **किसी पुरुष का मुँह न देखा था** यह दर्शाता है कि वह एक चरित्रवान सुनाम जवान युवती थी। यह परमेश्वर की प्रतिज्ञा के स्वरूप के अनुसार इसहाक के द्वारा अब्राहम के संतानों के लिए अति महत्वपूर्ण था। ऐसी युवती को इसहाक का पत्नी होना चाहिए जिससे कि उससे जन्में बच्चे किसी भी प्रकार के प्रश्नचिह्नों से घिरे न हों।

प्राचीन समाज में निर्विवाद वंशावली अति महत्वपूर्ण थी क्योंकि जायदाद, पिता से पुत्र को ही दी जाती थी। फिर भी, इस परिस्थिति में जायदाद से भी बढ़कर कुछ अन्य बात भी थी। परमेश्वर के शारीरिक और आत्मिक प्रतिज्ञा के पूर्ति के लिए रिबका का कुंवारापन निश्चित होना चाहिए क्योंकि केवल अब्राहम और इसहाक के वंशों के द्वारा ही परमेश्वर ने "भूमण्डल के सारे कुलों" को आशीष देने की प्रतिज्ञा की है (12:3; देखें 17:15-19; 22:17, 18)।

रिबका का शारीरिक सुंदरता और उसके निर्दोष चरित्र का बखान करने के बाद लेखक ने यह लिखा कि **वह कुएं में सोते के पास उतर गई और अपना घड़ा भर के फिर ऊपर आई**। स्पष्टतया, जो सोता बहकर कुएँ में जाता था उसमें कई सीढ़ीयाँ थी; अपने घड़े भरने के बाद उसको उन्हीं सीढ़ीयों से चढ़कर जानवरों को जल पिलाना था। यह कोई आसान कार्य नहीं था; इसलिए उसकी यह इच्छा कि वह ऊँटों को भी जल पिलाएगी यह दिखाती है कि वह शारीरिक रूप से मज़बूत व स्वस्थ भी थी।

आयत 17. युवती को देखने के बाद, अब्राहम का **वह दास उससे भेंट करने को दौड़ा** ताकि वह इस बात का निश्चय कर सके कि उसने जो बात प्रभु से प्रार्थना में रखी थी, वह उन शर्तों की पूर्ति करता है कि नहीं। जैसे ही वह उसके पास पहुँचा उसने यह विनती की कि वह उसे अपने **घड़े में से थोड़ा पानी** पिलाए।

आयत 18. हे मेरे प्रभु, ले पी ले उसका प्रत्युत्तर था। "मेरे प्रभु" के लिए रिबका ने (אֲדֹנָי, *अदोनाई)* शब्द का प्रयोग किया है जो किसी व्यक्ति को सम्मान जनक रूप से संबोधित करने के लिए प्रयोग किया जाता है।[9] इस संदर्भ में इसका अंग्रेजी समकक्ष "श्रीमान" होगा (NEB)।[10] थके मांदे यात्री के प्रति इस प्रकार के अनुग्रहित भरे प्रत्युत्तर के बाद, **उसने जल्दी से घड़ा उतारकर हाथ में लिये लिये उसको पिला दिया**।

आयत 19. दास ने तो जल पीने के अलावा कुछ और बातों के लिए भी प्रार्थना की थी; तो जब मूलपाठ यह कहता है कि **जब वह उसको पिला चुकी**, तो अनिश्यता और भी बढ़ गया था। क्या वह कुछ और भी करेगी? युवती ने अविलंब कहा, **मैं तेरे ऊँटों के लिये भी तब तक पानी भर भर लाऊंगी, जब तक**

वे पी न चुकें। एक जवान युवती द्वारा इस सीमा तक अतिथि सत्कार की उदारता कभी नहीं सुना गया होगा और वह भी जब वह एक अजनबी की सेवा कर रही हो और जबकि इस कार्य को समाप्त करने के लिए उसे बहुत समय तथा मज़बूत मनोस्थिति की भी आवश्यकता थी (24:14 की टिप्पणी देखें)।

आयत 20. वह अपने समर्पण के प्रति विश्वासयोग्य थी। **तब वह फुर्ती से अपने घड़े का जल हौदे में उण्डेल कर** फिर **कुएँ पर भरने को दौड़ गई** और उसके **सब ऊँटों के लिये** पानी भर दिया। उसकी अतिथि सत्कार की भावना पाठकों को अब्राहम का वह दृश्य स्मरण दिलाता है जब मेम्रे में उसको मिलने के तीन अतिथि आए थे और उसने इधर ऊधर भाग दौड़ कर किस तरह उनके लिए उत्तम भोजन तैयार करवाया था (18:1-8)।

आयत 21. दास उसे **चुपचाप** देखता रहा, वह इस युवती की सुंदरता पर मंत्रमुग्ध हो गया, जो इस बूढ़े अजनबी के ऊँटों को जल पिलाने में इतना समय लगा रही थी। उसने तो केवल अपने लिए थोड़ा जल ही मांगा था (24:17), लेकिन वह तो लगातार उन ऊँटों के लिए जल भरती रही जब तक कि वे पी कर तृप्त न हो गए। जब वह उसको देख रहा था तो वह इस बात की भी सोच में भी था कि यह प्रभु का कार्य है कि नहीं। वह इस बात को जानने के लिए भी उत्सुक था कि क्या प्रभु ने उसके **यात्रा को सफल किया है कि नहीं।**

आयत 22. जब तक **ऊँट पी चुके** थे, तब तक दास ने इस अदभुत युवती की प्रतीक्षा की और उसके बारे में सोचता रहा। तब उस पुरुष ने उसके अतिथि सत्कार और उसके ऊँटों को जल पिलाने के लिए **उसे आध तोले सोने** का **एक नथ** और **दस तोले** सोने के **कंगन** उसको दिए। हम निश्चित रूप से प्राचीन काल के आध तोले (शेकेल) या एक तोले (शेकेल) का मूल्य ठीक ठीक नहीं आंक सकते हैं फिर भी उसके सोने के आभूषण, युवती के उदारता और अतिथि सत्कार से बढ़कर था। सोने का अगूँठी (נֶזֶם, *नेजेम)* का अर्थ कान की बाली (35:4; निर्गमन 32:2, 3) या नथ हो सकता है (नीति. 11:22; यशा. 3:21); लेकिन यहाँ इसका अर्थ नथ ही हो सकता है क्योंकि दास ने उसके नाक में नथ पहना दिए थे (24:47)।

आयत 23. दास ने अपने मिशन को इस अतिथि सत्कार करने वाली गुणवान युवती से छिपा के रखा, जबकि उसने अपने दोनों चिह्नों को जिसकी पूर्ति के लिए उसने विनती की थी, पूरा होते हुए देखा था। उसे स्मरण था कि उसके स्वामी ने उससे कहा था कि वह उसके पुत्र इसहाक के लिए पत्नी अब्राहम के परिवार से ही लाए। इसलिए उसने उसके वंशावली के बारे में पता लगाया कि **तू किसकी बेटी है?** इसके साथ ही उसने यह पूछा कि क्या उसके और उसके लोगों के लिए उसके **पिता के घर में ठहरने** के लिए **स्थान** है कि नहीं।

आयत 24. उसने पहले अपने पिता का नाम बताकर उसको उत्तर दियाः **मैं बतूएल की बेटी हूँ।** इस घटना में बतूएल एक गौण चरित्र है जिसको इन सभी घटनाओं से अधिक कुछ लेना देना नहीं है। वह इस पूरे कथानक में केवल एक ही बार बोलता है। अपने पिता को उस क्षेत्र के अन्य व्यक्तियों से, जो संभवतः उसी

नाम के हों, अलग करने के लिए उसने कहा कि **बतूएल, नाहोर के जन्माए मिल्का का पुत्र था**। यह किसी की पहचान बताने की सबसे महत्वपूर्ण पहलू थी क्योंकि उसने यह प्रगट किया था कि वह तो मिल्का और नाहोर (अब्राहम का भाई) की पोती है।

आयत 25. इतना कहने के बाद और अपने उस चरित्र के विषय में जो उसने पहले प्रगट किया था, रिबका ने उत्साहपूर्ण एक और उदारता के कार्य के लिए अपने आप को समर्पण किया। अपने पिता से अनुमति लिए बिना उसने इन अजनबियों को अपने यहाँ ठहरने के लिए यह कहकर निमंत्रण दिया कि उसके घर में उनके ऊँटों के लिए पर्याप्त **पुआल और चारा** और उनके **ठहरने** के बहुत **कमरे** हैं।

आयत 26. दास का कुएँ के समीप प्रथम कार्य यह था कि वह परमेश्वर की अगुआई और इसहाक के लिए योग्य पत्नी पाने के लिए प्रार्थना करे। अब जबकि रिबका से उसकी भेंट हो चुकी है और उसने यह जान लिया है कि अब्राहम के इच्छा के अनुसार वह वंशावली और सभी योग्यताएं पूरा करतीं हैं तो उसको अपने आने का अभिप्राय बताने से नहीं रूकना चाहिए था। इसके विपरीत उसने **सिर झुकाकर यहोवा को दंडवत किया**।

आयत 27. दास ने परमेश्वर से प्रार्थना करके यह कहा, "धन्य है मेरे स्वामी इब्राहीम का परमेश्वर यहोवा, कि उसने अपनी करुणा और सच्चाई को मेरे स्वामी पर से हटा नहीं लिया: यहोवा ने मुझ को ठीक मार्ग पर चला कर मेरे स्वामी के भाई बन्धुओं के घर पर पहुँचा दिया है।" प्रथम दृष्टया, "मेरे स्वामी के भाई बन्धुओं" जैसे वक्तव्य उलझा सा जान पड़ता है क्योंकि न तो बतूएल और न ही लाबान (रिबका का भाई) अब्राहम के भाई थे। वास्तव में बतूएल तो उसका भतीजा और लाबान उसके भतीजे का पुत्र था। यह इब्रानी शब्द (אָח, *आह)* भाई के लिए दूसरा शब्द है जिसका एक विस्तृत अर्थ सगे भाई से हटकर हो सकता है (13:8 का टिप्पणी देखें)। इस संदर्भ में इसका तात्पर्य "सगे संबंधी" (ESV) या "रिश्तेदार" (NIV) है।

रिबका के परिवारवालों की प्रतिक्रिया (24:28-33)

[28]और उस कन्या ने दौड़ कर अपनी माता के घर में यह सारा वृत्तान्त कह सुनाया। [29]तब लाबान जो रिबका का भाई था, सो बाहर कुएं के निकट उस पुरुष के पास दौड़ा गया। [30]और ऐसा हुआ कि जब उसने वह नथ और अपनी बहिन रिबका के हाथों में वे कंगन भी देखे और उसकी यह बात भी सुनी, कि उस पुरुष ने मुझ से ऐसी बातें कहीं; तब वह उस पुरुष के पास गया और क्या देखा, कि वह सोते के निकट ऊंटों के पास खड़ा है। [31]उसने कहा, हे यहोवा की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ; तू क्यों बाहर खड़ा है? मैं ने घर को और ऊंटो के लिये भी स्थान तैयार किया है। [32]और वह पुरुष घर में गया और लाबान ने ऊंटों की काठियां खोल कर पुआल और चारा दिया और उसके और उसके संगी जनो के पांव धोने को जल दिया। [33]तब अब्राहम के दास के आगे जलपान के लिये कुछ रखा गया:

पर उसने कहा मैं जब तक अपना प्रयोजन न कह दूं, तब तक कुछ न खाऊंगा। लाबान ने कहा, कह दे।

आयत 28. रिबका दौड़कर **अपनी माता के घर गई** और उन्हें **सारा वृत्तान्त कह सुनाया**। उसने उस अजनबी, जिसने उसे कंगन और नथ दिए थे, के साथ हुई अपनी घटना बताई। उसके "माता के घर" के संदर्भ से यह विदित होता है कि उसके पिता का देहांत हो चुका था; और 24:50 में बतूएल के संदर्भ से यह अर्थ निकाला जा सकता है कि इस मूलपाठ में यह त्रुटिपूर्ण संयोजन बाद में किया गया होगा। लेकिन इसके विपरित कोई भी मूल पाठ इस शास्त्रीय त्रुटि का समर्थन नहीं करता है। बल्कि इस पाठ के भाषा का विश्लेषण इस प्रकार भी किया जा सकता है कि युवती का निकटतम संबंधी उसके माता के साथ रहते थे (रूत 1:8; श्रेष्ठ. 3:4; 8:2)। जैसे जैसे कहानी आगे बढ़ती है, लाबान युवती के भविष्य के बारे में बातचीत करने में प्राथमिक भूमिका निभाता है। संभवतः उसके पिता वृद्ध हो चुके हों और उसने इस प्रकार के गंभीर निर्णय को लेने की ज़िम्मेदारी अपने पुत्र को सौंप दी होगी।

आयतें 29, 30. लाबान के बारे में **रिबका का भाई**, वक्तव्य से यह अनुच्छेद प्रारंभ होता है जहाँ लेखक ने, नाहोर और मिल्का के बारे में पहले वर्णित वंशावली में अतिरिक्त जानकारियां उपलब्ध कराई है (देखें 22:20-24)। जिस प्रकार उसने (लेखक) ने **लाबान** का परिचय दिया है उससे यह जान पड़ता है कि जैसे ही रिबका ने घर में उस दास के बारे में बताने के लिए प्रवेश किया, तो **उसने वह नथ और अपनी बहिन रिबका के हाथों में वे कंगन भी देखे** और **उसकी यह बात भी सुनी जो उस पुरुष ने** उससे कही थी। इसलिए, तब वह **उस पुरुष के पास गया**; **जो सोते के निकट ऊंटों के पास खड़ा था**। लाबान के बारे में इस प्रकार का परिचय, उसके और उसकी बहन के अतिथि सत्कार भरे व्यवहार में भिन्नता प्रकट करती है। जब उसने उस दास के धन और उन लोगों को देखा जो उसके साथ दस ऊँटों के पास खड़े थे - जो उस समय का दुर्लभ आरामदायक परिवहन का साधन था - तो संभवतः वह लालच से भर गया होगा (यह याकूब की कहानी जो 29 अध्याय से लेकर 31 अध्याय तक पाई जाती है, से स्पष्ट है)।

आयत 31. सबसे पहले तो यह जानकर आश्चर्य होता है कि लाबान ने दास को **यहोवा की ओर से धन्य** पुरुष करके कैसे संबोधित किया, उसे उसके (दास के) परमेश्वर का नाम कैसे पता चला?[11] इसका संभवतः उत्तर यह हो सकता है कि रिबका ने अपने घरवालों को उस व्यक्ति के बारे में बताया होगा जिसने यहोवा की स्तुति और आराधना की जो उसे अब्राहम के सगे संबंधियों के घर तक ले आया है (24:26-28)। इसके साथ ही ढेर सारे सोने के आभूषण और अन्य सामग्री से लदे दस ऊँटों से लाबान को यह अंदेशा हुआ होगा कि यह सब ईश्वरीय आशीष का भाग होगा (देखें 24:1)। इसलिए उसने उस व्यक्ति से यह विनती की, **हे यहोवा की ओर से धन्य पुरुष भीतर आ: तू क्यों बाहर खड़ा है? मैं ने घर को और ऊँटो के लिये भी स्थान तैयार किया है?**

आयत 32. इस विनती के जवाब में **उस पुरुष ने उस घर में प्रवेश किया।** संभवतः बतूएल एक धनाढ्य व्यक्ति रहा होगा जिसके पास अपने बड़े परिवार को रहने के लिए तथा अब्राहम के दासों और ऊँटों के ठहरने के लिए पर्याप्त कमरे/स्थान रह हों। संभवतः जानवरों को ठहराने के लिए उन्हें अस्तबल तक ले गया होगा।

NASB इस प्रकार से अनुवाद करता है कि **लाबान ने ऊँटों की काठियाँ खोलकर उन्हें पुआल और चारा दिया** और अन्य दासों को **पैर धोने के लिए जल** दिया। चूँकि मूल इब्रानी भाषा में लाबान का नाम नहीं पाया जाता है तो इस आधार पर विषय के कर्ता का निर्धारण करना अत्यंत कठिन है। यह किसी भी व्यक्ति के लिए बिना कारण के किसी के ऊँटों में से सामान उतारना और स्वंय ही किसी अजनबी एंव उसके लोगों को आवश्यक सामग्री प्रदान कर उनका अतिथि सत्कार करना, असमान्य सा जान पड़ता है। लाबान ने संभवतः उन्हें प्रभावित करने के लिए यह सोचकर ऐसा किया होगा कि उसे भी कुछ बहुमूल्य उपहार मिल सकता है; या फिर पाठ का यह अर्थ हो सकता है कि उसने अपने दासों[12] को आदेश देकर अतिथियों के ठहरने के लिए उचित व्यवस्था करने के लिए कहा होगा।

आयत 33. जब आगन्तुक और उसके व्यक्तियों और उनके जानवरों के लिए ठहराने की व्यवस्था हो गई और पारंपरिक आदान प्रदान की रस्म पूरी हुई तो अब भोज के समय, उसके आने के उद्देश्य पर गंभीर वार्तालाप करने का समय आ गया था। जिस प्रकार अब्राहम का दास कुएँ पर चेतन था कि वह तब तक जल नहीं पीएगा या अपने ऊँटों को जल नहीं देगा जब तक कि वह युवती की जाँच न कर ले, उसी तरह अब उसके आने के मिशन की प्राथमिकता हो भी हो गई थी। जब **दास के आगे जलपान के लिये कुछ रखा गया** तो उसने अपने आने के **उद्देश्य बताए बिना खाकर** तृप्त होना उचित नहीं समझा। कोई भी इस व्यक्ति के कर्तव्यपरायणता की प्रसंशा किए बिना नहीं रह सकता है !इतनी लंबी दूरी की यात्रा करने के बाद अपनी भूख मिटाने के बजाय उसने अपने स्वामी के दिए गए कार्य की परिपूर्णता का अधिक महत्व समझा। इसलिए लाबान ने कहा, **कह दे।**

दास की कहानी (24:34-49)

[34]तब उसने कहा, मैं तो इब्राहीम का दास हूँ। [35]और यहोवा ने मेरे स्वामी को बड़ी आशीष दी है; सो वह महान पुरूष हो गया है और उसने उसको भेड़-बकरी, गाय-बैल, सोना-रूपा, दास-दासियाँ, ऊँट और गदहे दिए हैं। [36]और मेरे स्वामी की पत्नी सारा के बुढ़ापे में उससे एक पुत्र उत्पन्न हुआ है। और उस पुत्र को इब्राहीम ने अपना सब कुछ दे दिया है। [37]और मेरे स्वामी ने मुझे यह शपथ खिलाई कि मैं उसके पुत्र के लिये कनानियों की लड़कियों में से जिन के देश में वह रहता है, कोई स्त्री न ले आऊँगा। [38]मैं उसके पिता के घर और कुल के लोगों के पास जा कर उसके पुत्र के लिये एक स्त्री ले आऊँगा। [39]तब मैंने अपने स्वामी से कहा, कदाचित वह स्त्री मेरे पीछे न आए। [40]तब उसने मुझ से कहा, यहोवा,

जिसके साम्हने मैं चलता आया हूँ, वह तेरे संग अपने दूत को भेज कर तेरी यात्रा को सफल करेगा; सो तू मेरे कुल, और मेरे पिता के घराने में से मेरे पुत्र के लिये एक स्त्री ले आ सकेगा। 41तू तब ही मेरी इस शपथ से छूटेगा, जब तू मेरे कुल के लोगों के पास पहुँचेगा; अर्थात यदि वे मुझे कोई स्त्री न दें, तो तू मेरी शपथ से छूटेगा। 42सो मैं आज उस कुएँ के निकट आकर कहने लगा, हे मेरे स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा, यदि तू मेरी इस यात्रा को सफल करता हो: 43तो देख मैं जल के इस कुएँ के निकट खड़ा हूँ; सो ऐसा हो, कि जो कुमारी जल भरने के लिये निकल आए, और मैं उससे कहूँ, अपने घड़े में से मुझे थोड़ा पानी पिला; 44और वह मुझ से कहे, पी ले और मैं तेरे ऊँटो के पीने के लिये भी पानी भर दूँगी: वह वही स्त्री हो जिस को तू ने मेरे स्वामी के पुत्र के लिये ठहराया हो। 45मैं मन ही मन यह कह ही रहा था, कि देख रिबका कन्धे पर घड़ा लिये हुए निकल आई; फिर वह सोते के पास उतर के भरने लगी और मैंने उससे कहा, मुझे पिला दे। 46और उसने फुर्ती से अपने घड़े को कन्धे पर से उतार के कहा, ले, पी ले, पीछे मैं तेरे ऊँटों को भी पिलाऊँगी: सो मैंने पी लिया, और उसने ऊँटों को भी पिला दिया। 47तब मैंने उससे पूछा, कि तू किस की बेटी है? और उसने कहा, मैं तो नाहोर के जन्माए मिल्का के पुत्र बतूएल की बेटी हूं: तब मैं ने उसकी नाक में वह नथ और उसके हाथों में वे कंगन पहिना दिए। 48फिर मैं ने सिर झुका कर यहोवा को दण्डवत किया और अपने स्वामी इब्राहीम के परमेश्वर यहोवा को धन्य कहा, क्योंकि उसने मुझे ठीक मार्ग से पहुँचाया कि मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उसकी भतीजी को ले जाऊँ। 49सो अब, यदि तू मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो मुझ से कहो और यदि नहीं चाहते हो, तौभी मुझ से कह दो; ताकि मैं दाहिनी ओर, वा बाईं ओर फिर जाऊँ।

आयत 34. रिबका के परिवार को अभी तक इस अजनबी के बारे में ठीक ठीक पता नहीं था इसलिए उसने अपने आपको **अब्राहम का दास** करके उनसे परिचित किया। इस प्रकार उसने उन्हें यह बता दिया कि जो धन वह अपने साथ लाया है वह उसका नहीं है बल्कि वह अब्राहम का है।

आयत 35. वह उन्हें यह भी बताना चाहता था कि **यहोवा** ने **उसके स्वामी को बड़ी आशीष दी है** (24:1) जिनमें **भेड़-बकरी, गाय-बैल, सोना-रूपा, दास-दासियां, ऊँट और गदहे** शामिल हैं। जब दास ने यह कहा कि यहोवा ने उसके स्वामी को "बहुत आशीष" दी है तो उसके भाषा में 12:2 के आशीषों का संस्मरण होता है जहाँ यहोवा ने अब्राहम को "आशीष देने" और उसका नाम "बड़ा करने" और उससे "एक बड़ी जाति उत्पन्न करने" की प्रतिज्ञा की है। दास के ये शब्द यह दिखाता है कि वह अपने स्वामी के परमेश्वर का सच्चा विश्वासी बन गया है। धन के संदर्भ ने लाबान को आकर्षित किया होगा जिसमें उसके बहन का विवाह एक योग्य पुरूष के साथ होना तय था। अब अब्राहम के दास पर उस परिवार में आने के अभिप्राय को प्रकट करने का दबाव था।

आयत 36. वास्तव में, परमेश्वर की प्रतिज्ञा कि वह अब्राहम को "एक बड़ी

जाति" बनाएगा यह प्रदर्शित करता है कि क्यों इस दास ने कनान से हारान तक की लंबी दूरी तय की है। अब्राहम के दास ने इस परिवार को यह बताया कि **स्वामी की पत्नी सारा के बुढ़ापे में** एक **पुत्र उत्पन्न हुआ है** (17:17; 21:2, 7)। यह टिप्पणी इसलिए महत्वपूर्ण है क्योंकि यह यह बताता है कि रिबका से विवाह करने के लिए अब्राहम का पुत्र जवान है; जबकि वह भी इसहाक के समान जवान थी (देखें 24:24; 25:20)। यहाँ ध्यान देने योग्य विशेष बात यह है कि अब्राहम की सारी संपत्ति का केवल एक ही उत्तराधिकारी था और उसने **उस पुत्र** को **सब कुछ दे दिया है**।

यह वक्तव्य कि अब्राहम ने उसे "सब कुछ दे दिया" की जाँच की जानी चाहिए। अगले अध्याय में यह पाया जाता है कि अब्राहम ने इश्माएल और कतूरा से पैदा हुए अपने पुत्रों को भी उपहार दिया (25:1, 6)।[13] यह उसने तब किया जब वह जिंदा था और फिर उनको भेज दिया। उसकी मृत्यु के पश्चात इसहाक ही उसकी संपत्ति का एकलौता मालिक हुआ (देखें 21:10)। इस जानकारी ने इस परिवार को यह आश्वासन दिया कि यदि रिबका का इसहाक से विवाह हो जाता है तो वह उस अपार संपत्ति का आनंद उठाएगी और उसे किसी भी वस्तु की कमी न होगी।

आयतें 37, 38. अब्राहम के दास ने यह भी बताया कि उसके **स्वामी ने** उसे **शपथ खिलाई** है कि वह **उसके पुत्र के लिए कनानी** स्त्रियों में से, जिनके **देश में** वे रहते हैं, **स्त्री** नहीं लाएगा। बल्कि **उसे पिता के घर और कुल के लोगों के पास जा कर** वहाँ से **पुत्र के लिये एक स्त्री** लानी होगी (देखें 24:2-4)।

आयतें 39, 40. अब्राहम के दास ने रिबका के परिवारवालों को यह भी बताया कि उसने अपने स्वामी को यह भी कहा कि यदि युवती उसके साथ कनान न आना चाहे तो उसका मिशन असफल होगा। तो उसके स्वामी ने उसे पुनः आश्वासन दिया कि यह ईश्वरीय मिशन है और **यहोवा अपने दूत को** उसके **यात्रा को सफल** बनाने के लिए उसके आगे **भेजेगा** (देखें 24:5-7)।

इस अनुच्छेद का एक महत्वपूर्ण लक्षण यह है कि जब अब्राहम का दास, कुलपति के आदेशों का वर्णन करता है तो उसने कई बार कुलपति के शब्दों का अक्षरशः प्रयोग किया है। अन्य स्थानों पर उसने अपने स्वामी के शब्दों का सारांश प्रस्तुत किया है। दास के शब्दों के उद्धहरण से रिबका के परिवार ने जाना कि यह यहोवा की इच्छा थी कि वह अब्राहम के **पुत्र के लिए एक स्त्री** उसके **कुल**, और उसके **पिता के घराने** में से **ले आ सकेगा।** पत्नी, उसके संबंधियों, उसके पिता के गोत्र में से ही लाए। वह कनानी लोगों में से उसके लिए पत्नी न लाए। इस बात ने उनको यह सोचने के लिए मजबूर किया होगा कि अब्राहम के इस दास से उनका मिलना कोई दुर्घटना नहीं थी। संभवतः यहोवा के दूत ने ही उसे रिबका को ढूँढने में सहायता की होगी।

आयत 41. वे यह जानकर भी आश्चर्य में पड़ गए होंगें जब अब्राहम के दास ने उन्हें बताया कि उसके स्वामी ने उसे युवती को कनान आने के लिए बाध्य न करने के लिए कहा। परिवार को यह विकल्प दिया गया कि वे चाहे तो रिबका को न भेजे और तब दास अपने स्वामी के **शपथ से स्वतंत्र** हो जाएगा (देखें 24:8)।

आयतें 42-44. इस बात को आपस में बात करने के पश्चात कि इसहाक और रिबका का विवाह वांछनीय है और परमेश्वर की योजना के अनुसार है, तो दास इस बात को जानने के लिए उत्सुक था कि क्या उसकी खोज **सफल** हुई कि नहीं। उसने उन सभी घटनाओं को, उसकी प्रार्थनाओं सहित, आपस में जोड़ा जो उसके साथ कुएँ पर हुआ था (देखें 24:10-14)।

आयत 43 में अब्राहम के दास ने रिबका के परिवार को जो जानकारियाँ दी वह रिबका से भेंट के समय हुई घटना से थोड़ा भिन्न था। 24:16 में उसको "कुमारी" (בְּתוּלָה, *बेतुल्लाह)* करके संबोधित किया गया, जबकि दास ने उसे यहाँ पर युवती (עַלְמָה, *अल्माह)* करके संबोधित किया है। रिबका को वर्णित करने के लिए अलग अलग शब्दों का प्रयोग किया गया है, लेकिन इस संदर्भ में, दोनों इब्रानी शब्दों का अर्थ युवती है (24:14) और वह कुँआरी है। वास्तविक तथ्य तो यह है कि उसने अब तक किसी पुरूष के साथ लैंगिक संबंध नहीं बनाया था (24:16)। यह अति महत्वपूर्ण है क्योंकि इसहाक के लिए लैंगिक रूप से शुद्ध पत्नी की तलाश थी।

आयतें 45, 46. अब्राहम के दास ने उत्साहपूर्वक बताया कि रिबका ने किस प्रकार सभी मानकों की पूर्ति की है (देखें 24:15-21)। यहाँ सब बातें स्पष्ट हो गई थीं और अब दास के पास ऐसा कोई कारण नहीं था कि वह अपने मिशन का परिवर्तन करे या उनको इस बात के लिए मनाये कि रिबका को उसके साथ कनान भेजे।

आयत 47. अब्राहम के दास ने रिबका के परिवार वालों को रिबका से उसके प्रथम मिलन की विस्तृत जानकारी दी तो वह पहले बताए गए उसके वक्तव्य से थोड़ा भिन्न था। पहले कथावाचक ने लिखा कि अब्राहम के दास ने युवती को नथ और कंगन उसके वंशावली और उसके घर में उसके और उसके आदमियों और जानवरों के ठहरने के लिए स्थान, पूछने से पहले दी (24:22)। जब वह इन घटनाओं का वर्णन कर रहा था तो वह यह बताना भूल गया कि उसने रिबका से उनके ठहरने इत्यादि के बारे में भी पूछा था। संभवतः वह चतुराई से बातचीत कर रहा था ताकि वह अधिक अपेक्षित न दीखे और अपने मेज़बान को नाराज़ न कर दे।

इसके अलावा, इस वृतांत में और भी विसंगति पायी जाती है। कथावाचक ने युवती को दिए गए उपहार के बारे में उसके पहचान करने से पहले ही वर्णित है (24:22), जबकि अब्राहम के दास के कथन में यह उल्टा है। उसने आभूषण के बारे में उसके (युवती) माता पिता के बारे में बात करने के बाद ही बोला। वास्तव में, यहाँ अधिक विसंगति नहीं है केवल क्रिया के प्रयोग के आधार पर ही यह दिखाई देता है। वृतांत यह बताता है कि उसने (दास) आभूषण लिया (24:22) लेकिन दास ने यह बताया कि उसने उसके **नाक में नथ** और उसके **हाथों में कंगन** पहिना दिए। यहाँ संभावना यह है कि पहले उसने आभूषण निकाले और उसके बाद उसने उसके पिता के वंश के बारे में उससे पूछा होगा और तब तक उसने उसको आभूषण नहीं पहनाया होगा जब तक कि उसे उसके पिता के बारे में और अब्राहम से उसके संबंध के बारे में जानकारी प्राप्त नहीं हुई

होगी।[14] सबसे महत्वपूर्ण बात तो यह है कि अब्राहम के दास के मिशन में परिवार की पहचान अधिक महत्व रखता है क्योंकि इसहाक के लिए अब्राहम के "पिता के घर" से ही एक योग्य वधु को ढूँढना था (24:38, 40)। यदि रिबका दूसरे गोत्र की होती तो उसे कीमती आभूषण नहीं दिया जाता।

आयत 48. अब्राहम के दास ने परिवारवालों को संक्षिप्त में बताया कि उसने युवती से कुएँ पर क्या बोला थाः **यहोवा ... ने मुझे ठीक मार्ग से पहुंचाया कि मैं अपने स्वामी के पुत्र के लिये उसकी भतीजी को ले जाऊं** (देखें 24:27)।

आयत 49. अब्राहम के दास ने अंतिम निवेदन के साथ अपनी बात समाप्त की। इब्रानी भाषा में यह पाठ यह नहीं बताता है कि वह केवल लाबान से ही बात कर रहा था बल्कि बतूएल और रिबका के परिवार के अन्य सदस्यों से भी वह बातचीत कर रहा था। उसने द्वितीय पुरूष पुल्लिंग बहुवचन क्रिया को तीन बार अपने वक्तव्य में प्रयोग किया है, **सो अब, यदि** *[तुम]* **मेरे स्वामी के साथ कृपा और सच्चाई का व्यवहार करना चाहते हो, तो** *[तुम]* **मुझ से कहो और यदि नहीं चाहते हो, तौभी** [तुम] **मुझ से कह दो** (जोर दिया गया)। इस प्रकार उसने परिवारवालों से रिबका और इसहाक के संभावित भविष्य के रिश्ते के बारे में पूछा।

यहाँ इस बात का ठोस प्रमाण प्रस्तुत किया गया है कि रिबका का अब्राहम के पुत्र के साथ विवाह, परमेश्वर के इच्छा के अनुसार था। वह यह नहीं चाहता था कि लाबान और बतूएल इस रिश्ते को त्यागे; वह चाहता था कि वे इस बात पर जल्द निर्णय लें ताकि वह जान ले कि उसे **दाहिनी ओर, वा बाईं ओर फिरना** है। कुछ विद्वानों का मानना है कि इस वाक्य का अर्थ यह है कि यदि उन्होंने उसके निवेदान को त्यागा तो यह अब्राहम के दास को इसहाक के लिए दूसरी पत्नी ढूँढने के लिए मौका प्रदान करेगा। जबकि, इस प्रकार का विचार अब्राहम का आदेश और उसके दास का परमेश्वर से प्रार्थना के उत्तर के असंगत होगा। अब्राहम के दास का ठोस मानना यह है कि रिबका से उसका कुएँ पर भेंट, परमेश्वर के योजना के अनुसार था। यहोवा अब्राहम के दास को उचित समय पर उचित स्थान पर ले आया कि उसकी भेंट उचित परिवार के उचित सदस्य से हो जिससे कि उसकी प्रतिज्ञा पूरी हो सके। इस बात का भी अब्राहम के दास को भलीभाँति ज्ञान था कि परमेश्वर, रिबका के परिवारवालों के स्वतंत्र इच्छा का अनादर नहीं करेगा और न ही वह उस पर उसके पक्ष में कोई निर्णय लेने के लिए रिबका या उसके परिवार पर दबाद डालेगा। यह अभिव्यक्ति कि उसके "दाएं या बाएं" मुड़ना संभवतः यह बताता है कि वह जानना चाहता था कि उनकी क्या राय है और उसे वहाँ से आगे क्या करना है।

यात्रा की सफलता (24:50-61)

[50]तब लाबान और बतूएल ने उत्तर दिया, यह बात यहोवा की ओर से हुई है: सो हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा। [51]देख, रिबका तेरे साम्हने है, उसको ले जा और वह यहोवा के वचन के अनुसार, तेरे स्वामी के पुत्र

की पत्नी हो जाए। 52उनका यह वचन सुनकर, इब्राहीम के दास ने भूमि पर गिर के यहोवा को दण्डवत किया। 53फिर उस दास ने सोने और रूपे के गहने और वस्त्र निकाल कर रिबका को दिए और उसके भाई और माता को भी उसने अनमोल वस्तुएं दी। 54तब उसने अपने संगी जनों समेत भोजन किया और रात वहीं बिताई और तड़के उठ कर कहा, मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये विदा करो। 55रिबका के भाई और माता ने कहा, कन्या को हमारे पास कुछ दिन अर्थात कम से कम दस दिन रहने दे; फिर उसके पश्चात वह चली जाएगी। 56उसने उन से कहा, यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सफल किया है; सो तुम मुझे मत रोको अब मुझे विदा कर दो, कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊं। 57उन्होंने कहा, हम कन्या को बुला कर पूछते हैं और देखेंगे, कि वह क्या कहती है। 58सो उन्होंने रिबका को बुला कर उससे पूछा, क्या तू इस मनुष्य के संग जाएगी? उसने कहा, हां मैं जाऊंगी। 59तब उन्होंने अपनी बहिन रिबका और उसकी धाय और इब्राहीम के दास और उसके साथी सभों को विदा किया। 60और उन्होंने रिबका को आशीर्वाद दे के कहा, हे हमारी बहिन, तू हज़ारों लाखों की आदिमाता हो और तेरा वंश अपने बैरियों के नगरों का अधिकारी हो। 61इस पर रिबका अपनी सहेलियों समेत चली और ऊँट पर चढ़ के उस पुरूष के पीछे हो ली: सो वह दास रिबका को साथ ले कर चल दिया।

आयत 50. दास की निष्कपट और उसकी प्रभावशाली गवाही सुनकर, **लाबान और बतूएल** ने यह माना कि इस पूरे घटना कर्म में यहोवा का हाथ है। इसलिए, उन्होंने कहा, **हम लोग तुझ से न तो भला कह सकते हैं न बुरा** (देखें 31:24, 29; 2 शमूएल 13:22)। NIV इसको आधुनिक शब्दों में इस प्रकार अनुवाद करता है: "हम तुझसे ऐसा या वैसा नहीं कह सकते हैं।"

आयत 51. यदि परमेश्वर ने इन सब बातों के द्वारा बोला है तो मनुष्य के पास इसको ठुकराने का बहुत कम कारण रहता है; इसलिए उन्होंने अब्राहम के दास से कहा वह **रिबका** को **ले जाए और वह यहोवा के वचन के अनुसार, उसके स्वामी के पुत्र की पत्नी हो जाए।**

ऐसा निर्णय लेने के लिए लाबान और बतूएल के कई सच्चे इरादों की संभावनाएं भी दिखाई देती है। सर्वप्रथम, अब्राहम के परमेश्वर का आदर करने और इन सारी बातों में उसकी इच्छा की पूर्ति में उनका सच्चा अंगीकार दिखाई देता है। दूसरी बात, अब्राहम के दास ने उसके पास जो धन था उसके द्वारा उनको आश्चर्यचकित किया होगा; संभवतः उन्होंने रिबका के दुल्हन बनने के मूल्य (दहेज) के रूप में और अधिक धन लेना चाहा होगा। अंत में, संभवतः वे अब्राहम के परमेश्वर से डर गए होंगे। उन्होंने उसकी कल्पना अपने यहाँ अर्थात मेसोपुतामिया के देवी देवताओं से की होगी (31:19, 30) कि यदि उन्होंने अब्राहम के दास के विनती नहीं सुनी और उसकी इच्छा के प्रति समर्पित नहीं हुए तो देवता उसका बदला उनसे लेगें। इनमें से कोई एक या ये सभी संभावनाओं ने लाबान और बतूएल को रिबका को कनान की लंबी यात्रा करके इसहाक से

विवाह करने की अनुमति दी। मूलपाठ केवल यही बताता है कि इन दोनों व्यक्तियों ने क्या कहा परंतु यह इस विषय पर शांत है कि उनके मन में इस संबंध में क्या चल रहा था।

आयत 52. इस कहानी में तीसरी बार, दास ने परमेश्वर की आराधना की। सबसे पहले उसने उस कन्या को ढूँढने की सफलता के लिए प्रार्थना की जिसे परमेश्वर ने इसहाक के लिए पत्नी होने के लिए चुना था (24:12-14)। दूसरी बार, वह धरती तक झुका और परमेश्वर का धन्यवाद किया कि उसने उसकी उसके स्वामी के सम्बन्धियों के घराने तक पहुँचने में अगुआई की (24:26, 27)। तीसरी बार जब दास ने **प्रार्थना** की, तो लाबान और बतूएल के निर्णय के लिए कि उन्होंने रिबका को उसके साथ कनान जाकर उसके स्वामी के पुत्र का पत्नी होने के लिए अनुमति दे दी है के प्रति यहोवा के प्रति आदर प्रकट करते हुए उसने **भूमि पर गिर के यहोवा को दण्डवत किया**।

आयत 53. जब सहमति हो गई, अब्राहम के **दास** ने **सोने और रूपे के गहने, और वस्त्र निकालकर रिबका को दिए**। उसके अलावा जो दास ने कन्या को एक नत्थ और कंगन पहले दिए थे (24:22, 47), अब उसने सोने और चाँदी की चीजें और कीमती वस्त्र भी उसके अलावा दिए। यह उदारता का एक अन्य प्रकटीकरण और रिबका के लिए एक सद्भाव था कि वह अपने घर को त्यागे और इसहाक से विवाह करे।

दास ने **उसके भाई और उसकी माता को भी अनमोल वस्तुएं दीं**। प्राचीन पूर्वी देशों में यह प्रचलित प्रथा थी परिवार को "दहेज" देने की (מֹהַר, *मोहर*)।[15] यह दुल्हे के परिवार की सम्पति पर निर्भर था यह कीमती उपहारों के रूप में पुत्री को खोने की एक भरपाई होती थी। इसका मूल्य एक व्यक्ति के द्वारा कई वर्षों की कमाई की बराबर होता था (देखें 29:18-20)।[16] "कीमती चीजें" जो लाबान और रिबका की माता को दी गईं हो सकता है कानूनी दहेज हो।

आयत 54. लम्बी वार्तालाप पूर्ण हुई और रिबका के कनान देश में अब्राहम के पुत्र की पत्नी होने के लिए जाने की सारी बातें पूरी कर ली गईं। तब दास और उसके **पुरुषों ने भोजन किया** और रिबका के परिवार के साथ रात बिताई। स्वाभाविक रूप से, दास कनान जाने को उत्सुक था, ताकि वह अपने स्वामी को शुभ समाचार बताए। क्योंकि उसे वहाँ से चले एक महीना या उससे अधिक समय हो गया था। जब वे **तड़के उठे**, दास ने कहा, **मुझ को अपने स्वामी के पास जाने के लिये विदा करो।**

क्या दास की तत्काल जाने की विनती कुण्ठित थी या विनम्र थी? यह कुण्ठित मांग थी तथ्य यह है कि उसने यह नहीं कहा, "कृपया मुझे मेरे स्वामी के पास जाने दे।" इससे तत्काल जाने का आभास होता है कि जाने की विनती करने की बजाए वे तत्काल रवाना हुए।[17] विनम्र विनती का तथ्य यह है कि दास ने ऐसे कहा मानों वह जाने की अनुमति मांग रहा है। हो सकता है कि यह एक विनम्रता पूर्वक कहने का एक तरीका था कि रिबका को उसके साथ कनान जाने के लिए तैयार होने में सहायता करें।[18] क्योंकि हम दास के कहने की शैली को

नहीं जानते, उसके इस कथन के भेद को जानने का कोई तरीका नहीं है। ऐसा आभास होता है कि दास की विनती विनम्रतापूर्वक थी। यदि वह बहुत ही कुण्ठित भाव से होता और जाने की इस स्थिति में लाबान और उसकी माता को ठोकर लगती तो उसने समस्त कार्य की सफलता को खतरे में डाल दिया होता।

आयत 55. इस तरह की शीघ्रता की रवानगी का विचार स्पष्ट रूप से रिबका के परिवार के ध्यान को पकड़ना था। यह जानते हुए कि अब वे उसे दोबरा कभी नहीं देखेंगे, वे **कुछ दिन** के लिए उसे रखना चाहते थे - सम्भवतः **कम से कम दस दिन** - इससे पहले कि वह कनान के लिए रवाना हो।

आयत 56. फिर भी दास ने उनको कहा, **यहोवा ने जो मेरी यात्रा को सफ़ल किया है; सो तुम मुझे मत रोको।** परमेश्वर ने इसहाक के लिए पत्नी ढूँढने के कार्य को आशीषित किया और अब घर लौटने का समय था। एक अन्य विचार यह भी है कि दास के निर्णय ने जान लिया कि रुकने के विचार से रिबका और/या उसके माता पिता का समय के साथ मन न बदल जाए। इससे उसका कार्य विफल हो सकता था। दूसरी बार उसने कहा, **अब मुझे विदा कर दो, कि मैं अपने स्वामी के पास जाऊँ।**

आयत 57. यहाँ तक कि इस तात्कालिक भेजने की विनती के लिए लाबान और उसकी माता सहमत नहीं थे कि इस तरह की जल्दबाज़ी में रिबका को रवाना करने की ज़रूरत थी। उन्होंने निर्णय किया कि **कन्या को बुला कर पूछते हैं** कि क्या वह अब्राहम के इन सेवकों के साथ कनान देश में तत्कालिक रूप से जाने को तैयार है।

आयत 58. लाबान ने अच्छी तरह से सोचा होगा कि उसकी बहन का घर के साथ स्वाभाविक लगाव उसकी रवानगी में विलम्ब उत्पन्न करेगा। इसलिए, जब उन्होंने **रिबका** से पूछा कि क्या वह जाएगी, वे उसके तीव्र उत्तर पर हैरान थेः **मैं जाऊँगी।** वह इस बात से निश्चित थी कि दास के वचन सच्चे हैं और यह एक दिव्य बुलाहट थी। वह जानती थी कि उसकी मंज़िल उसके परिवार के साथ हारान नहीं थी, परन्तु इसहाक की पत्नी के रूप में, दूर देश कनान थी। इस निर्णय के साथ, उसने विश्वास का आचरण आरम्भ किया यह वर्षों पहले मेसोपोटामिया से अब्राहम की बुलाहट की याद को ताज़ा करता है (12:1-5)।

आयत 59. रिबका के दृढ़ उत्तर ने परिवार को दर्शाया कि उसे रोका नहीं जा सकता, इसलिए **उन्होंने** [अनिच्छा से] **अपनी बहन रिबका को भेज दिया।** संदर्भ में जो शब्द प्रयोग किया गया है "बहन" कइयों को सोचने के लिए बाध्य करता है कि मात्र उसके भाई ने ही रिबका को विदा किया, जबकि उसके माता पिता इतनी पीड़ा में थे कि वे उसकी विदाई में शामिल नहीं हुए। परन्तु, "शब्द" हो सकता है कि यहाँ पर "महिला सम्बन्धी" के सामान्य अर्थ से प्रयोग किया गया है जैसे "भाई" को "पुरुष सम्बन्धी" के रूप में उल्लेख किया जा सकता है (13:8; 24:27)। सम्भवतः, सारा परिवार अलविदा कहने के लिए वहाँ था जब उसकी रवानगी हुई।

रिबका के साथ उसकी व्यक्तिगत धाय, दबोरा थी (35:8), जिसने उसे

आरम्भिक बालपन में दूध पिलाया था।[19] उसके साथ अन्य दासियाँ भी थीं ("दासियाँ"; 24:61), जो उसे पत्नी के रूप में और इसहाक घर में माँ के रूप में नई ज़िम्मेदारियों में सहायता करेंगी। यह रिबका की धाय ही होगी और उसकी दासियाँ जो उसके परिवार से दहेज के रूप में उसे दी गईं थीं।[20] यात्रा के दौरान इस परिचारकगण को अब्राहम के **दास और उसके साथी** के द्वारा ले जाया गया और संरक्षित किया गया।

आयत 60. रिबका के जाने से पहले परिवार ने उस पर दोगुनी आशीष को उच्चारित किया। पहला भाग था कि **उसका वंश** बढ़े, और वह **हज़ारों लाखों** की आदिमाता हो। दूसरा भाग यह था कि तेरा वंश अपने **बैरियों के नगरों का अधिकारी हो**। यह उन्हीं आशीषों के अनुरूप है जो परमेश्वर ने अब्राहम पर उच्चारित की थीं: "मैं निश्चय तुझे आशीष दूंगा; और निश्चय तेरे वंश को आकाश के तारागण, और समुद्र के तीर की बालू के किनकों के समान अनगिनित करूंगा, और तेरा वंश अपने शत्रुओं के नगरों का अधिकारी होगा" (22:17)। वंशों से सम्बन्धित परमेश्वर ने सारा को भी यह कहते हुए आशीषित किया था कि "वह जाति जाति की मूल माता" होगी (17:16)।

आयत 61. दास ने हारान में रिबका और उसके परिवार को समझाने के द्वारा कि उसके लिए यह परमेश्वर की इच्छा है कि वह अब्राहम के पुत्र के साथ विवाह करे अपने स्वामी के कार्य को पूरा किया। उसके सगे सम्बन्धियों की सहमति और आशीष के साथ **रिबका** और उसकी **सहेलियाँ .ऊँट पर चढ़ के उस पुरुष के पीछे हो लीं** कनान देश की लम्बी यात्रा के लिए चल पड़ीं। वे ऊँट जिनको हारान के लिए दहेज उठाने के लिए प्रयोग किया गया था (24:10) उन्हीं को रिबका और उसकी सहेलियों को यात्रा पर ले जाने के लिए प्रयोग किया गया।

इसहाक और रिबका का विवाह (24:62-67)

[62]इसहाक जो दक्खिन देश में रहता था, सो लहैरोई नाम कुएं से हो कर चला आता था। [63]और सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था: और उसने आंखे उठा कर क्या देखा, कि ऊंट चले आ रहे हैं। [64]और रिबका ने भी आंख उठा कर इसहाक को देखा, और देखते ही ऊंट पर से उतर पड़ी [65]तब उसने दास से पूछा, जो पुरुष मैदान पर हम से मिलने को चला आता है, सो कौन है? दास ने कहा, वह तो मेरा स्वामी है। तब रिबका ने घूंघट ले कर अपने मुंह को ढ़ाप लिया। [66]और दास ने इसहाक से अपना सारा वृत्तान्त वर्णन किया। [67]तब इसहाक रिबका को अपनी माता सारा के तम्बू में ले आया, और उसको ब्याह कर उससे प्रेम किया: और इसहाक को माता की मृत्यु के पश्चात शान्ति हुई।

आयत 62. इस अध्याय के शेष भाग में, लेखक ने दास के कार्य का हारान में सफलतापूर्वक समापन होने का वर्णन किया है। घर से यात्रा का कोई विवरण

नहीं दिया गया है; कहानीकार रवानगी से (24:61) सीधा घर पहुँचने का ही वर्णन करता है (24:62-66)। जब दास की भेंट इसहाक से होती है, **वह दक्खिन देश में** [नेगेव में] **रह रहा था**, **बेर-लहैरोई** के आसपास। वहीं परमेश्वर का दूत कुएँ के पास हाजिरा से तब मिला था जब वह सारा से झगड़ा करके भाग गई थी (16:7, 14)।

यह स्थान कई प्रश्न खड़े करता है, क्योंकि कनान में जिस अन्तिम स्थान का वर्णन किया है वह ममरे या हेब्रोन था, जहाँ सारा को गाड़ा गया था (23:19)। (1) क्या इसहाक ने अपने पिता को छोड़ दिया था? ऐसा हो सकता है क्योंकि इसहाक के जानवर और भेड़ बकरियाँ इतने बढ़ गए थे जिसने उसे अपने पिता से अलग होने के लिए बाध्य किया, जैसा कि लूत ने कई वर्ष पहले किया था (13:5-12)। एक अन्य सम्भावना यह है कि इसहाक ने पिता और उसकी नई पत्नी कतूरा के पास क्षेत्र में न रहने का निश्चय किया हो (25:1)। (2) क्या अब्राहम और इसहाक दोनों ही वहाँ से हट गए थे? उन्होंने सम्भवतः हेब्रोन को छोड़ दिया हो मौसम बदलने के कारण से और वे अपने जानवरों को किसी अन्य स्थान पर चराना चाहते हों (13:3, 4 पर टिप्पणियों को देखें)। इस मामले में, मात्र इस भाग में अब्राहम का वर्णन नहीं किया गया क्योंकि इसहाक और उसकी नई दुल्हन पर ध्यान केन्द्रित है। कहानी में इसहाक मुख्य भूमिका बन जाता है, जबकि उसका पिता पीछे रह जाता है।

अब्राहम के विषय में उल्लेख की कमी से धारणा उठी कि जब हारान से दास वापिस आया तो कुलपति की मृत्यु हो चुकी थी। परन्तु यह विचार बाइबल अंश में दिए गए आंकड़ों से मेल नहीं खाता है। जो कि प्रकट करतें हैं कि इसहाक और रिबका के विवाह के बाद अब्राहम 35 वर्ष तक जीवित रहा (24:1 पर टिप्पणी को देखें)।

आयत 63. इस समय **इसहाक** के विषय थोड़ा सा प्रकट हुआ है; परन्तु जब वह लगभग "चालीस वर्ष की आयु" का था (25:20), विवरण बताता है कि **वह सांझ के समय वह मैदान में ध्यान करने के लिये निकला था**। शब्द שׂוּחַ *(सुआख)* पुराना नियम में मात्र इसी समय पाया जाता है, इसलिए इसका अर्थ अस्पष्ट है। जब सूर्य ढल रहा था तो इसहाक क्या कर रहा था? जबकि आम सहमति नहीं है, शब्द का उपयुक्त अर्थ है "ध्यान करने" (KJV; NIV; ESV) या "प्रार्थना करना"।[21] वह जानता था कि उसके पिता ने अपने अति विश्वासयोग्य दास को उसके सगे सम्बन्धियों में से उसके लिए पत्नी लाने के लिए भेजा है। क्या कार्य सफल हुआ? यदि हाँ, तो किस तरह की कन्या उसकी पत्नी होगी? उसके ध्यान करने में परमेश्वर से प्रार्थना करना शामिल होगा। दास अपने कार्य में सफल हो, इसके साथ ही साथ कनान देश में आते हुए उनकी लम्बी यात्रा सुरक्षित हो। जैसे इसहाक ने प्रार्थना की और विचार किया, **उसने अपनी आँखें उठाईं** और देखा कि **ऊँट आ रहे हैं**। इसी तरह से उसने उस कन्या की पहली झलक देखी जिसे उसकी पत्नी होना था।

आयत 64. उसी समय, **रिबका ने अपनी आँखें उठाईं** और अपने भावी पति की झलक देखी। उस क्षण के उत्साह में, **वह ऊँट पर से उतर पड़ी**, जोकि प्राचीन

पूर्व देशों की एक विनम्र शिष्टता थी (यहोशू 15:18; न्यायियों 1:14; 1 शमूएल 25:23; 2 राजा 5:21)।

आयत 65. तब उस ने **दास** से पूछा, **जो पुरुष मैदान पर हम से मिलने को चला आता है, सो कौन है?** प्रकट रूप से, इसहाक खेतों में से काफ़िले के नज़दीक आ रहा था, इस आशा के साथ कि उसके पिता के ऊँट उसकी भावी पत्नी के साथ वापिस आ रहे हैं। **दास** ने उत्तर दिया, **वह मेरा स्वामी है**। इस समय तक, दास हमेशा से ही अब्राहम को अपने स्वामी की रूप में उल्लेख करते आ रहे थे। कुछ लोग इसकी व्याख्या इस तरह करते हैं कि इस समय तक इसहाक का पिता मर चुका था। यह एक अनुचित धारणा है, क्योंकि अब्राहम और इसहाक दोनों ही इस दास के स्वामी थे।

जब रिबका ने यह सुना कि यह इसहाक है जो पास आ रहा है, तब **रिबका ने घूंघट लेकर अपने मुंह को ढांप लिया**। घूंघट से मुंह ढांपने का चिन्ह है कि वह पवित्र है, अविवाहित कुँवारी; अपने भावी पति के सामने उसका यह कार्य उच्च श्रेणी की महिला मंगेतर के लिए यह उचित था। यह प्रथा इस बात को बताती है कि बाद में विवाह की रात में याकूब कैसे ठगा गयाः क्योंकि लिआ का चेहरा उसकी आँखों के अलावा घूंघट से ढका हुआ था, वह जान नहीं पाया कि उसका विवाह गलत स्त्री से हो रहा है (29:23-25)।

आयत 66. अपनी वापसी पर, **दास** ने **इसहाक से अपना सारा वृत्तान्त वर्णन किया**। परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और रिबका को चुनने की सम्पूर्ण प्रक्रिया में, उसके परिवार को आशीष के साथ विदा करने के लिए सहमत करने में और कनान के लिए सुरक्षित यात्रा करने में अपना दिव्य मार्गदर्शन दिया। दास जानता था कि यह सब बातें संयोगवश नहीं हो सकती थीं।

आयत 67. अध्याय 24 की कहानी **इसहाक और रिबका** के विवाह के लक्ष्य तक पहुँचती है। उनका मिलन परमेश्वर की भावी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा। इस चरण से आगे, इसहाक की भूमिका अब्राहम के घराने के मुखिया के रूप में होगी और रिबका सारा के स्थान पर कुलमाता होगी।

तब **इसहाक रिबका को अपनी माता सारा के तम्बू में ले आया**, विवाह से पहले उसका उसके तम्बू में जाना उपयुक्त नहीं होगा। भले ही सारा की मृत्यु हुए तीन वर्ष बीत चुके थे,[22] इसहाक ने अपनी भावी दुल्हन के लिए तम्बू को बनाए रखा था।

विवाह के सम्पन्न होने से पहले इस जोड़े ने कितने समय तक प्रतीक्षा की, बाइबल अंश इसके विषय कुछ भी प्रकट नहीं करता है। इसहाक ने तब तक प्रतीक्षा की जब तक अब्राहम ने उत्सव किया और अपने पुत्र को देखकर आनन्दित हुआ, प्रतिज्ञा का पुत्र उसके भाई नाहोर की पोती को अपनी दुल्हन के रूप में ले (24:15)।

जब भी विवाह सम्पन्न हुआ, रिबका उसकी पत्नी बनी और इसहाक ने **उससे प्रेम किया**। बाइबल आधारित विवाह की कहानियों में अक्सर प्रेम करने का वर्णन नहीं मिलता है, परन्तु यह इसलिए क्योंकि सामान्यता माता पिता विवाह करवाते थे और जोड़े विवाह होने तक प्रेम करना नहीं सीखते थे।[23] परन्तु इसहाक की भावनाओं का यहाँ वर्णन किया गया है। उसे अपनी माँ की मृत्यु पर

बहुत शोक था और तीन वर्ष बीत जाने के बाद भी वह अभी तक शोक में था। कहानीकार प्रकट करता है कि रिबका ने उसके हृदय के खालीपन को भर दिया और उसे **माता की मृत्यु के पश्चात शान्ति हुई**।

अनुप्रयोग

एक दास का विश्वास (अध्याय 24)

अध्याय 24 में मुख्य विषय इसहाक के लिए पत्नी ढूँढना है, कहानीकार हमें अब्राहम के प्रधान दास के विश्वास के विषय भी सिखाना चाहता है। जैसा उसका विश्वास था हमें भी उसी प्रकार के विश्वास को पाने का प्रयास करना चाहिए।

साक्षी के आधार पर विश्वास (24:1-9)। इसहाक की जो पत्नी हो उस सही कन्या को ढूँढने के लिए दिव्य अगुआई की प्रतिज्ञा से अब्राहम अपने दास के लिए एक आशीष था। पवित्रशास्त्र कई घटनाओं का वर्णन करता है जब परमेश्वर ने ज़बरदस्त कार्य किएः परमेश्वर ने अपनी महिमा और सामर्थ्य को सृष्टि, जलप्रलय और निर्गमन की घटनाओं में प्रकट किया। परमेश्वर के भिन्न तरीकों से कार्य करने का वर्णन करता हैः बाहरीय रूप से आश्चर्यकर्म से नहीं, परन्तु समझदारी के द्वारा। इस कहानी में, उसने दृश्यों के पीछे अपनी इच्छा को पूरा किया, सामान्यता दिखाई देने वाली मानवीय क्रियाओं के द्वारा। परमेश्वर ने अब्राहम को कहा और कई अवसरों पर स्वयं को उस पर प्रकट किया; परन्तु जहाँ तक हम जानते हैं, न ही कुलपति ने और न ही उसके दास ने इस अध्याय में हुई घटनाओं के दौरान परमेश्वर की वाणी को सुना या दिव्य दर्शन का अनुभव किया हो।

इसके बजाय, दास का विश्वास अपने स्वामी की विश्वसनीय साक्षी पर निर्भर था, जो कि उसकी दिव्य बुलाहट से और इतने वर्षों से परमेश्वर के द्वारा उण्डेली गई आशीषों का साक्षी था। विश्वास का सम्बन्ध अनदेखी वस्तुओं से है और "अभी नहीं हैं," और यह परमेश्वर की इच्छा को इतना वास्तविक बना देता है कि कोई व्यक्ति इसकी शर्तों पर कार्य कर सकता है। इस तरह के विश्वास ने अब्राहम को वह सब छोड़ने के सक्षम किया जो उसने देखा और जानता था कि वह अनजाने स्थान पर गया और जिन आशीषों की उसने कल्पना भी नहीं की थी उनका अनुभव किया (इब्रा. 11:1, 8-10)।

अब्राहम के वचनों ने दास को स्मरण करवाया कि सब कुछ परमेश्वर के अधिकार में था और वह उसके जीवन को बना रहा था। वही था जिसने अब्राहम को "उसके जन्मस्थल से" लिया (24:7) और उसे भरपूर आशीषित किया और उसे इस स्थान पर लाया। यह घटनाएँ संयोगवश नहीं हुई थीं; वे परमेश्वर की योजना का भाग थीं। हारान से इसहाक के लिए पत्नी को ढूँढने का कार्य अब्राहम की आशीषों के लिए परमेश्वर की इच्छा को पूरी करने के लिए और उसके द्वारा संसार की सभी जातियों को आशीषित होने के लिए आवश्यक था। इसलिए उसने अपने दास को उस लम्बी यात्रा के लिए भेज दिया, अब्राहम ने उसे विश्वास से चलने के लिए उत्साहित किया, इस विश्वास से कि इसहाक के लिए उपयुक्त

पत्नी ढूँढने मेंउसकी अगुआई करेगा, जैसा वह उसके स्वामी के साथ हमेशा से रहा है।

एक व्यक्ति जो विश्वास करने के लिए सब कुछ देखता है उसके पास इस तरह का विश्वास नहीं है जो परमेश्वर आशीषित करता है और अपने उद्देश्य को पूरा करने के लिए प्रयोग करता है। अपने पुनरुत्थान के बाद जब प्रभु यीशु अपने शिष्यों पर प्रकट हुआ, उस समय थोमा उनके साथ नहीं था। जब शिष्यों ने उसे सुसमाचार बताया कि यीशु जी उठा है, उसने उत्तर दिया, "जब तक मैं उस के हाथों में कीलों के छेद न देख लूं, और कीलों के छेदों में अपनी उंगली न डाल लूं, तब तक मैं प्रतीति नहीं करूंगा" (यूहन्ना 20:25)। प्रभु यीशु थोमा पर दयालु था। एक सप्ताह के बाद, वह उस पर प्रकट हुआ और कहा, "अपनी उंगली यहां लाकर मेरे पंजर में डाल और अविश्वासी नहीं परन्तु विश्वासी हो" (यूहन्ना 20:27)। इस बात पर थोमा ने उसे विश्वास के साथ प्रत्युत्तर दिया, "हे मेरे प्रभु, हे मेरे परमेश्वर!" यीशु ने उस से कहा, "तू ने तो मुझे देखकर विश्वास किया है, धन्य हैं वे जिन्होंने बिना देखे विश्वास किया" (यूहन्ना 20:28, 29)। इस तरह का विश्वास अधिकांश आरम्भिक मसीहियों के पास था (1 पतरस 1:8) और उसी तरह का विश्वास आज हमारे पास भी होना चाहिए। हमने उसकी महिमामयी जिलायी गई देह को नहीं देखा, परन्तु हम "अभी तक नहीं" के भविष्य में पुनरुत्थान पर भरोसा करते हैं (1 कुरि. 15:50-58; 1 थिस्स. 4:13-18)। हमारा विश्वास प्रेरितों की साक्षी पर आधारित है, जिन्होंने उसे उसकी मृत्यु के बाद जीवित देखा और उसकी साक्षी को वर्णित किया: "इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे" (यूहन्ना 14:19; देखे 1 यूहन्ना 3:1-3)।

यह उसी प्रकार का विश्वास है जिसका अनुसरण करने के लिए इब्रानियों के लेखक ने अपने पाठकों को बुलाया जब उसने उसे बनाकर रखा कि "अब विश्वास आशा की हुई वस्तुओं का निश्चय, और अनदेखी वस्तुओं का प्रमाण है" (इब्रा. 11:1)। आगे उसने लिखा, "और विश्वास बिना उसे प्रसन्न करना अनहोना है, क्योंकि परमेश्वर के पास आनेवाले को विश्वास करना चाहिए, कि वह है; और अपने खोजनेवालों को प्रतिफल देता है" (इब्रा. 11:6)। इसी तरह का विश्वास नूह का था, चाहे उसने विश्वस्तर पर बाढ़ को कभी नहीं देखा था; यही बात अब्राहम पर भी लागू होती है, जितनी भी परमेश्वर ने उसे आशीषों की प्रतिज्ञा दी थी उनमें से किसी का भी उसने अनुभव नहीं किया था (इब्रा. 11:7, 8)। विश्वास की गुणवत्ता जिसकी परमेश्वर चाह रखता है उसके लिए उसके दिखाई देने वाली प्रकटीकरण की, दूत की सुनाई देने वाली आवाज़, या अनोखे आश्चर्यकर्म की आवश्यकता नहीं है। विश्व इतिहास में, अधिकांश विश्वासियों ने इन में से किसी को भी नहीं देखा या अनुभव किया। उनके विश्वास का आधार उन लोगों की उपयुक्त साक्षी है जो परमेश्वर के साथ चले और जिन्होंने पुराने नियम में उसके ज़बरदस्त कार्यों का अनुभव किया और नए नियम में यीशु और उसके प्रेरितों के द्वारा। जैसे हम सुसमाचार सुनते हैं, हमारे हृदय विश्वास से सचेत हो जाते हैं और हमारे जीवन बदल जाते हैं। इसलिए विश्वास "विजय" है जो "संसार पर" विजयी होती है (1 यूहन्ना 5:4)।

प्रार्थना की सामर्थ्य में विश्वास (24:10-14)। प्रार्थना की सामर्थ्य के लिए अपनी साक्षी के द्वारा अब्राहम अपने दास के लिए आशीष था। पाँच अवसरों पर, कहानीकार बताता है कि अब्राहम ने परमेश्वर के लिए आराधना, प्रार्थना और/या बलिदान के लिए वेदी बनाई (12:7, 8; 13:4, 18; 22:9)। इन घटनाओं में से एक में, हम पढ़ते हैं कि कुलपति को "परमेश्वर ने दर्शन दिया" (12:7); दो स्थानों पर, बाइबल कहती है कि उसने "यहोवा के नाम को पुकारा" (12:8; 13:4)। उत्पत्ति 13:18 उसकी वेदी बनाने का वर्णन करता परन्तु यह आराधना स्पष्ट कार्य को नहीं बताता जो उसने परमेश्वर को चढ़ाया। 22:2, 9 का विवरण देता है को दर्शाता है कि कुलपति ने मोरिय्याह पहाड़ पर इसहाक की बलि के लिए वेदी बनाई, भले ही अब्राहम ने इसके बजाए मेढ़े की बलि से समापन किया (22:13)।

अब्राहम के अति विश्वासयोग्य दास ने सम्भवतः इन सब घटनाओं को देखा हो, भले ही उसका स्वामी और इसहाक ही मोरिय्याह पहाड़ पर थे (22:5)। निश्चय ही, इस दास ने कुलपति के द्वारा की गई निष्ठावान प्रार्थनाओं को कई बार अन्य अवसरों पर देखा होगा और यह सच्चे परमेश्वर पर विश्वास करने का कारण रहा होगा जो परमेश्वर लोगों के जीवनों में कार्य करता है और उनकी प्रार्थनाओं का उत्तर देता है।

उन पाँच विवरणों के अलावा जो कहते हैं कि अब्राहम ने वेदियाँ बनाईं, लूत के अन्त, उसके परिवार और सदोम के अन्य वासियों सम्बन्धी परमेश्वर के साथ हुई प्रार्थना संवाद की हमें प्रभावशाली रिपोर्ट हमें दी गई है (18:22-33)। यह बातचीत, परमेश्वर द्वारा कुलपति की उस प्रार्थना को सुनने और उसका उत्तर देने की इच्छा को प्रदर्शित करती है कि यदि दस धर्मी जन भी उस दुष्ट नगर में मिल जाएं तो परमेश्वर उस नगर को तबाह न करे। यह संदेहजनक है कि दास ने इस प्रार्थना संवाद को देखा होगा, जबकि कहानीकार मात्र परमेश्वर और अब्राहम का ही वर्णन करता है। परन्तु, ऐसा होना उपयुक्त दिखाई देता है कि कुलपति ने उसको यह सब बताया हो। वह उन 318 पुरुषों में से एक रहा होगा जिन्होंने मेसोपोटामिया के आक्रमणकारियों से सदोम के लोगों को छुड़ाने के लिए युद्ध किया था (14:14-16)। यदि ऐसा है तो वह और उसके संगी सेवकों ने उनको जीवनों को बचाने के लिए खतरा मोल लिया, उसे सम्भवतः नगर के लोगों के दुख के लिए अधिक चिन्ता थी। आगे, युद्ध के बाद उत्सव में, उसने मलिकिसिदक और अब्राहम को शत्रुओं पर इस तरह की विजय देने के लिए परमेश्वर की महिमा करते हुए सुना होगा (14:17-24)।

ज्यों ज्यों समय बीतता गया, अब्राहम ने इस युवा को एक समर्पित दास के रूप में परिपक्व होते हुए देखा। उनके सम्बन्ध और अधिक घनिष्ठ होते गए जब कुलपति ने इस निष्ठावान दास के हृदय की श्रद्धा को अपने स्वामी के प्रति देखा। यही कारण है कि कुछ लोग ऐसा सोचते हैं कि दमिश्क का एलीएजेर ही वह दास था जिसको कुलपति ने अपना दत्तक पुत्र बनाना चाहा था (15:2-4)। जबकि परमेश्वर ने एलीएजेर को अब्राहम का वारिस नहीं बनने दिया (17:15-19), कुलपति के पास अभी भी विकल्प था कि वह उसे अपनी सारी सम्पति पर प्रधान

ठहराए, अब्राहम इस दास के लिए पिता समान था, और उस पर प्रार्थना की महत्वता का प्रभाव पड़ा। ज्यों ज्यों वर्ष बीतते गए, दास ने देखा कि उसका स्वामी विश्वास और प्रार्थना का निष्ठावान व्यक्ति है जो वह है और जो कुछ उसके पास है वह उसके लिए परमेश्वर की प्रशंसा करता है।

वह यह भी जानता था कि उसके स्वामी के विश्वास की चाल में इसहाक का जन्म सर्वोच्च घटना है क्योंकि वे दोनों सन्तान उत्पन्न करने की आयु को लांघ चुके थे। यदि दास के मन में परमेश्वर के प्रति उस आश्चर्यजनक घटना के लिए कुछ भी संदेह था तो वह अब हट गया था। वह जानता था कि परमेश्वर के लिए कुछ भी करना असम्भव नहीं है। इसलिए अब्राहम ने उसे अपने कार्य के लिए मेसोपोटामिया भेजा, इस प्रतिज्ञा के साथ कि इसहाक के लिए पत्नी ढूँढने की अगुआई में परमेश्वर अपना दूत भेजेगा (24:7), वह झिझका नहीं। उसने उसी घड़ी अपनी लम्बी यात्रा को आरम्भ किया।

दास के विश्वास की निष्ठा का उदाहरण यह है कि वह जैसे ही हारान में "नाहोर के नगर में" आया, उसने अपने स्वामी के पुत्र के लिए उपयुक्त कन्या को ढूँढने के कार्य की सफलता के लिए प्रार्थना की (24:12-14)। इस सम्बन्ध में उसने स्पष्ट रूप से दो चिन्हों की मांग कीः जिस कन्या से वह पानी पीने की मांग करेगा और वह उसे पानी पिलाए और उसके ऊँटों को भी पिलाए। बाइबल अंश दर्शाता है कि रिबका ने दोनों ही बातें कीं जिनकी दास ने परमेश्वर से मांग की थी (24:15-20)। तब उसने उसे सोने की नत्थ और दो कंगन दिए (24:21, 22) और उससे दो प्रश्न किए: "तू किसकी पुत्री है?" और "क्या तेरे पिता के घर में हमारे लिए रुकने का स्थान है?" (24:23)। उसने उत्तर दिया कि उसका पिता बतुएल है और उसका दादा नाहोर (अब्राहम का भाई) है। फिर उसने पुष्टि की कि उनके घर पर्याप्त स्थान है और ऊँटों के लिए पुआल और चारा भी है (24:24, 25)। इससे, दास को विश्वास हो गया कि परमेश्वर ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दे दिया है; इसलिए वह फिर झुक गया, धन्यवाद किया और अपने स्वामी के सम्बन्धियों के घराने तक पहुँचाने के लिए परमेश्वर की बढ़ाई की (24:26, 27)।

जैसे अब्राहम अपने दास के लिए प्रार्थना का एक आदर्श था, यीशु अपने शिष्यों के लिए आदर्श बना। उन्होंने उसे कई अवसरों पर प्रार्थना करते हुए देखा था और उन्होंने उससे विनती की कि जैसे यूहन्ना बपतिस्ता ने अपने शिष्यों को प्रार्थना करना सिखाया वह भी उन्हें सिखाए (लूका 11:1)। इसलिए उसने उन्हें प्रार्थना का आदर्श दिया और उन्हें प्रार्थना की क्षमता को सिखाया (लूका 11:2-13; मत्ती 6:5-15)। प्रेरितों और आरम्भिक मसीहियों ने प्रभु यीशु के पुनरुत्थान और स्वर्गारोहण के बाद इस आदर्श का अनुसरण किया (प्रेरितों 1:9-14)। हम पिन्तेकुस्त के दिन उनकी प्रार्थना को पढ़ते हैं (प्रेरितों 2:40-47), और उसके बाद जब पतरस कैद में था और उसे जान से मारने की धमकी मिली थी (प्रेरितों 12:5-17), और जब अन्ताकिया की कलीसिया ने शाऊल और बरनबास को भेजा (प्रेरितों 13:1-3)।

पौलुस ने अपने मिशनरी जीवन में प्रार्थना की सामर्थ्य का अनुभव किया।

परमेश्वर ने उसे समय समय पर खतरों, सताव और मृत्यु से बचाया।[24] जैसे अब्राहम ने अपने दास को प्रार्थना की सामर्थ्य के विश्वास से आशीषित किया था। उसी तरह से पौलुस ने पहली शताब्दी की कलीसिया को (हर युग के व्यक्ति को) अपनी प्रार्थना के आदर्श के द्वारा आशीषित किया। उसने थिस्सलुनीके में परमेश्वर के लोगों को "लगातार प्रार्थना करने" के लिए सावधान किया (1 थिस्स. 5:17) और इफसुस के लोगों को प्रार्थना करने के लिए विनती की "और हर समय और हर प्रकार से आत्मा में प्रार्थना, और विनती करते रहो, और इसी लिये जागते रहो, कि सब पवित्र लोगों के लिये लगातार विनती किया करो।" उसने उनको इसलिए भी प्रार्थना करने के लिए कहा, "और मेरे लिये भी, कि मुझे बोलने के समय ऐसा प्रबल वचन दिया जाए, कि मैं हियाव से सुसमाचार का भेद बता सकूं" (इफ. 6:18, 19)।

विश्वास साझा किया गया (24:28-51)। अब्राहम के दास से रिबका के परिवार में आशीषों का विस्तार हुआ। जो बात हुई थी उसे देखकर रिबका इस अजनबी के विषय बताने के लिए अपने घर की ओर दौड़ीः उसके वचन, वह उपहार जो उसने उससे पाए थे और जो प्रार्थना उसने की थी। लाबान अपनी बहन के वचनों से बहुत प्रभावित हुआ; और जब उसने उसे सोने की नत्थ और कंगन दिखाए, लाबान उस व्यक्ति से भेंट करने के लिए दौड़ा (24:28-30)। बाद में हम देखते हैं, याकूब के साथ उसका व्यवहार, कि लाबान सम्पति को पाने के लिए झूठ बोलने और छल करने के लिए राजी था (29:13-31:16)। इस अवसर पर, उसने दयालु मेजबान के रूप में कार्य किया और उनको अपने घर पर बुलाया और उन्हें "परमेश्वर के धन्य व्यक्ति" कहा (24:31)। इसका अर्थ यह होता है कि अब्राहम अपने दास के लिए विश्वास को डालने के द्वारा आशीष बना जो परमेश्वर उसके जीवन के द्वारा कर रहा था और दास ने वही विश्वास अपने मेज़बान को बताया। बाइबल अंश यह स्पष्ट नहीं करता लाबान की आशीष निष्ठावान थी या नहीं। जो भी हो उसका उचित व्यवहार देखा गया, उसने इस दास को उनके पैर धोने के लिए पानी के साथ अपने दास दिए। इसके अतिरिक्त उसने उसके ऊँटों को खाने के लिए पर्याप्त चारा दिया और उसने सबके लिए शानदार भोजन तैयार किया (24:32, 33)।

दास अपने कार्य के प्रति इतना कर्तव्यनिष्ठ था कि उसने तब तक भोजन नहीं खाया जब उसने अपने वहाँ आने का कारण उन्हें नहीं बताया। जब लाबान ने उसे "बोलने के लिए" कहा (24:33), उसने स्वयं को अब्राहम का दास बताया अब्राहम जिसे परमेश्वर ने बहुत आशीषित किया था, "भेड़ बकरियों, सोने चाँदी, दास दासियाँ और ऊँट और गदहों से" (24:34, 35)। तब उसने परिवार को अब्राहम की पत्नी सारा के विषय बताया, जिसने बुढ़ापे में उसके स्वामी के लिए एक पुत्र को जन्म दिया। उसने बताया कि इसहाक उस सारी सम्पत्ति का अकेला वारिस है (24:36)।

जैसे ही उन सब घटनाओं को बताने लगा जो 24:1-27 में हुई थीं, दास ने अपने स्वामी पर हुई परमेश्वर की आशीषों पर ज़ोर दिया, परमेश्वर का जिसने

उसकी इस कार्य में अगुआई की और जिस तरीके से परमेश्वर ने उसकी प्रार्थनाओं का उत्तर दिया और सही कन्या की ओर उसने अगुआई की। उसने स्वयं के धन्यवाद करने के विषय भी बताया जिसके लिए परमेश्वर ने उसे रिबका के लिए अगुआई दी, उसके परिवार के सम्बन्ध उसके स्वामी के निर्देश के साथ थे। बिना किसी विलम्ब के उसने लाबान और बतुएल को निर्णय करने के लिए कहा कि वह रिबका को इसहाक की पत्नी होने के लिए कनाने देश में जाने के लिए अनुमति दें। उनका प्रत्युत्तर बड़ा ही साधारण थाः जो कुछ हुआ था उन सबको देखते हुए, उन्होंने कहा, "यहोवा के वचन के अनुसार" (24:51)।

इस कहानी के लिए परिवार के पास मात्र दास के शब्द ही थे। कोई प्रयोग सिद्ध प्रमाण नहीं थे कि इस व्यक्ति को चार सौ मील से भी अधिक दूरी की यात्रा तय करके सही समय पर रिबका को मिलाने में दूत की अगुआई है। परन्तु, जब लाबान और बतुएल रिबका को कनान में भेजने और इसहाक के साथ विवाह करने के लिए सहमत हो गए तो उन्होंने एक दृढ़ विश्वास को प्रकट किया कि "यह बात यहोवा की ओर से हुई है" (24:50)।

दास का संदेश सच्चा प्रमाणित हुआ, क्योंकि रिबका के परिवार से झूठ बोलकर उसका तो कोई लाभ नहीं था। परमेश्वर की ओर से प्रत्येक संदेश में लोगों के हृदयों को स्पर्श करने और उनके जीवनों को बदलने की सामर्थ्य होती है (देखें 1 कुरि. 1:21-25)। यह विधिपूर्वक है यीशु का जीवन, मृत्यु और पुनरुत्थान पहली शताब्दी के लोगों के लिए इतना सामर्थ्यशाली क्यों था; यह सच्ची प्रमाणित हुई। कोई व्यक्ति जो इतिहास की इन घटनाओं का इनकार करता है उसे यह बताया चाहिए कि क्यों प्रेरितों और अन्य आँखों देखे गवाहों ने विरोध और घोर सताव होने के बावजूद भी सुसमाचार का प्रचार किया। जबकि यह सच है कि लोग धन, ख्याति या पद पाने के लिए कभी कभी झूठ बोलते हैं, कोई भी व्यक्ति जिसको वह असत्य मानता है उसकी लगातार घोषणा नहीं करेगा यदि उसका सब कुछ खोना हो जिसमें उसका प्राण भी शामिल है।

पौलुस की साक्षी बहुत ज़बरदस्त थी क्योंकि वह मरने से डरता नहीं था। उसने दमिश्क की राह पर यीशु को जीवित देखा था (प्रेरितों 9:1-22)। अपने बपतिस्मा के बाद, मसीहियों को निर्दयी सताने वाला पौलुस एक महान प्रचारक में बदल गया। उस समय से उसने साक्षी दी, "क्योंकि मेरे लिये जीवित रहना मसीह है, और मर जाना लाभ है" (फिलि. 1:21)। इसलिए अपनी मृत्यु से कुछ ही समय पहले पौलुस ने तीमुथियुस को प्रोत्साहित किया "यीशु मसीह को स्मरण रख, जो दाऊद के वंश से हुआ, और मरे हुओं में से जी उठा; और यह मेरे सुसमाचार के अनुसार है" (2 तीमु. 2:8)। तब उसने पहले के एक भजन के एक भाग का उल्लेख कियाः

> यदि हम उसके साथ मर गए हैं, तो उसके साथ जीएंगे भी; यदि हम धीरज से सहते रहेंगे, तो उसके साथ राज्य भी करेंगे; यदि हम उसका इनकार करेंगे तो वह भी हमारा इनकार करेगा। यदि हम अविश्वासी भी हों तौभी वह

विश्वासयोग्य बना रहता है, क्योंकि वह आप अपना इनकार नहीं कर सकता (2 तीमु. 2:11-13)।

सभी मसीही आत्मिक सामर्थ्य और आशा के साथ यीशु की प्रतिज्ञा को स्मरण करते हुए मौत का सामना कर सकते हैं, "इसलिये कि मैं जीवित हूं, तुम भी जीवित रहोगे" (यूहन्ना 14:19)।

एक विशेष कार्य पर भेजा गया (24:1-9)

अध्याय 24 एक सारांश कथन के साथ आरम्भ होता है कि "यहोवा ने अब्राहम को सब बातों में उसको आशीष दी थी" (24:1)। कहानीकार पाठकों को स्पष्ट रूप से परमेश्वर की मूल प्रतिज्ञा को स्मरण करवाना चाहता था जो कुलपति की बुलहाट का एक भाग थीः उसे आशीर्वाद देना, उसका नाम बड़ा करना (धन, पद और उसके साथियों में आदर के साथ), उन्हें आशीर्वाद देना जो उसे आशीर्वाद दें, और उनको श्राप देना जो उसे श्राप दें (12:2, 3)। परन्तु अब्राहम को अभी तक प्रतिज्ञा किए हुए यह आशीर्वाद नहीं मिले थेः अभी उसे कनान देश के वरदान की, रचे गए विशाल देश को पाने की और वे आशीषें जो उसके द्वारा संसार की सब जातियाँ पाने वाली थी की प्रतीक्षा थी।

यह अतिरिक्त आशीषें केवल इसहाक के साथ ही होने वाली थीं। उन आशीषों को साकार रूप लेने के लिए इसहाक को विवाह करने की और अपने परिवार की ज़रूरत थी। अब्राहम ने अति विश्वासयोग्य दास को हारान में अपने ही घराने से इसहाक की पत्नी होने के लिए उचित कन्या ढूँढने को भेजा। इससे पहले कि व्यक्ति को मेसोपोटामिया भेजना और उसे यह संवेदनशील कार्य सौंपता, कुलपति ने उसे अपना कार्य पूरा करने के लिए एक शपथ दिलाई (24:2-9)।

यहाँ तक कि अब्राहम ने सम्भवतः पहले भी अपनी कहानी को अपने दास को और अपने सेवकों कई बार बताया होगा, वह जानता था कि उसे फिर से बताना आवश्यक है। उसे यह भी याद होगा कि उसे दूसरों के लिए आशीष का स्रोत होना है (12:2), इसलिए उसने अपने दास को हारान की इस महत्वपूर्ण यात्रा पर भेजने से पहले इन सच्चाइयों को बताना ज़रूरी समझा। देश के लिए आशीषों से सम्बन्धित अनुभव पाने के लिए, कुलपति ने अपने दास को स्पष्ट निर्देश दिए कि उसका पुत्र प्रतिज्ञा के देश में ही रहेगा उस शपथ के कारण जो परमेश्वर ने उससे खाई थीः "तेरे वंशज को मैं यह देश दूँगा" (24:7)। अब्राहम जानता था कि एक कन्या उसके घराने से कनान देश में दास के साथ आने के लिए मना कर सकती है। उस मामले में, कुलपति अपनी शपथ के प्रति स्वतन्त्र होगा। परन्तु किसी भी स्थिति में इसहाक को कनानी स्त्री से विवाह नहीं करना चाहिए (24:3-8)।

जब अब्राहम ने अपने दास को इस विशेष कार्य के लिए हारान भेजा, उसने एक उदाहरण दिया जिसका बाद में यीशु और प्रेरित अनुसरण करेंगे। दास का यह कार्य स्वभाव में मुख्य रूप से शारीरिक था, परन्तु इसमें अन्त तक होने वाली आत्मिक मंशाएँ हैं। दास को इसहाक के लिए सही पत्नी ढूँढने में विश्वासयोग्य होना था ताकि

यह दो जातियों के लिए पूर्वपुरुष बने जिनके द्वारा यीशु मसीह उद्धारकर्ता जन्म लेगा। यीशु का कार्य था इस संसार में उसके स्वर्गारोहण के बाद प्रत्येक जाति को सुसमाचार पहुँचाने के लिए विश्वासयोग्य पुरुषों (प्रेरित) को ढूँढना (मत्ती 28:18-20; मरकुस 16:15, 16; लूका 24:46-49)। यह पुरुष संसार की सभी भावी पीढ़ियों पर आत्मिक आशीषों को लाएँगे (प्रेरितों 2:5-11, 36-41; गला. 3:26-29)। निस्संदेह यह विशाल कार्य इन 12 शिष्यों के लिए पूरा करना बहुत बड़ी बात थी, यहाँ तक पौलुस के द्वारा यह कार्य बढ़ता गया। सुसमाचार अन्य लोगों को सौंपा जाना था, और उन्हें इसे अन्त समय तक लगातार करते रहना है। इसीलिए पौलुस कैद किया गया और सिर काटने वाली तलवार का सामना किया - उसने यह ज़िम्मेदारी तीमुथियुस को इन शब्दों के साथ सौंप दीः "और जो बातें तू ने बहुत गवाहों के साम्हने मुझ से सुनी है, उन्हें विश्वासी मनुष्यों को सौंप दे; जो औरों को भी सिखाने के योग्य हों" (1 तीमु. 2:2)। सभी मसीहियों के लिए हर युग में विश्वासयोग्य दास होने का आदेश है जिन्होंने सुसमाचार को ग्रहण किया, दूसरों को आगे दें (1 कुरि. 15:1-4)।

दूतों की सेवा (24:7)

अब्राहम ने दूतों की सेवा सम्बन्धी अपने दास को साक्षी दी। कुलपति के जीवन काल में दूतों की सेवा के विषय कई विवरण मिलते हैं जिनके विषय उसने सुना या व्यक्तिगत रूप से शामिल हुआ और उसने निस्संदेह अपने परिवार और अपने सेवकों को बताया होगा। उनमें से कुछ इस प्रकार से हैं:

1. जब हाजिरा सारा के क्रोध से बचकर जंगल में भाग गई थी, यह वह दूत ही था जिसने उसे पाया और उसे कुलपति के घर में वापिस भेजकर नाश होने से बचाया (16:7-14)।

2. कुलपति का ममरे में दूत के साथ एक अनोखा व्यक्तिगत अनुभव हुआ, जब तीन व्यक्ति अचानक ही आ प्रकट हुए, और उन्होंने भोजन खाने के समय अब्राहम पर प्रकट किया कि अगले वर्ष सारा के पुत्र होगा। यह स्पष्ट रूप मनुष्यों के रूप में दूत ही थे, और उन में से एक परमेश्वर था (सम्भवतः परमेश्वर का दूत; 18:1-33)। यह बाइबल अंश इब्रानियों के लेखक के कथन के साथ खड़ा होता हुआ दिखाई देता हैः "पहुनाई करना न भूलना, क्योंकि इस के द्वारा कितनों ने अनजाने स्वर्गदूतों की पहुनाई की है" (इब्रा. 13:2)।

3. उत्पत्ति के कहानीकार ने यह भी वर्णन किया कि "परमेश्वर ने, अब्राहम से यह कहकर उसकी परीक्षा की" कि वह वेदी पर अपने पुत्र इसहाक को होमबलि करे (22:1, 2)। परन्तु जब कुलपति अपने पुत्र को घात करने ही वाला था, बाइबल अंश बताता है कि परमेश्वर के दूत ने उसे यह कहते हुए रोक दिया, "अब जान गया कि तू परमेश्वर का भय मानता है। क्योंकि तू ने जो मुझ से अपने पुत्र ... को भी, नहीं रख छोड़ा" (22:11, 12)। एक बार फिर ऐसा दिखाई देता है कि इस अवसर पर परमेश्वर दूत के रूप में बोला।

क्योंकि कुलपति और उसका परिवार दोनों ही का दूत के साथ व्यक्तिगत

अनुभव था, यह देखना आसान है कि उसने क्यों अपने दास को यह कहते हुए आश्वासन दिया, "वही [परमेश्वर] अपना दूत तेरे आगे आगे भेजेगा, कि तू मेरे पुत्र के लिये वहां [हारान] से एक स्त्री ले आए" (24:7)। अब्राहम अपने दास के लिए आशीष था क्योंकि उसके विश्वास ने उसके दास को विश्वास करने के लिए प्रेरित किया कि इसहाक के लिए उचित पत्नी लाने का उपाय करने के लिए परमेश्वर का दूत उसकी अगुआई करेगा।

रिबका का विश्वास (24:15-67)

अब्राहम के आदेश के प्रति दास की विश्वासयोग्यता रिबका और इसहाक की ओर आशीष लाई। भले ही रिबका आयु में छोटी थी, वह मूर्ख या लोभी नहीं थी। इसके विपरीत उसका भाई लाबान, जो धन के प्रति लालची था, उनको लेने का विचार रिबका के मन में नहीं था। भले ही दस ऊँट जिनपर कीमती चीजें लदी हुई थीं रिबका को प्रभावित किया होगा, जैसे उसने सोने की नत्थ और कंगन पाए थे, उसका स्तर इससे ऊपर उठा हुआ दिखाई देता है और वह एक आत्मिक युवा कन्या है, जिसे सम्पत्ति की झलक से जीता नहीं जा सकता।

उसने दास की साक्षी पर विश्वास किया होगा जो उसके स्वामी की दिव्य बुलाहट मेसोपोटामिया और कनान जाने के लिए थी ताकि परमेश्वर उसे धरती के सभी घरानों की आशीष की प्रेरणा के रूप में प्रयोग करे। सम्भवतः उसने अपने जीवन को एक धनी व्यक्ति की पत्नी उसके बच्चों माँ के रूप से ऊपर उठना चाहा। ऐसा दिखाई देता है कि उसने अपनी भूमिका को पूरा करने की बुलाहट को महसूस किया, वह जो उसकी कल्पना से भी कहीं बढ़कर है।

भले ही इब्रानियों के 11वें अध्याय में विश्वास के महान नायकों की सूची में रिबका का नाम नहीं है, कुछ कारणों से वह उसी वर्ग से है। (1) उसने कनान देश में जाने के लिए विश्वास का कदम उठाया, जैसे बहुत वर्ष पहले अब्राहम ने किया था (प्रेरितों 7:2, 3)। (2) उसने यात्रा में अपने साथ अपने परिवार के लोगों को ले जाने का प्रयास नहीं किया। उसके लिए यह कितना कठिन हुआ होगा, उसने उनको अपने पीछे छोड़ दिया। (3) न ही उसने हारान में कई वर्षों तक संकोच किया जब तक कि उसके पिता (या माता) की मृत्यु न हो गई, जैसा अब्राहम ने किया था। उसने उसी घड़ी नये देश में इस दिव्य कार्य के लिए दास के साथ हो ली और अपने पति से मिलने के लिए जिसे उसने कभी नहीं देखा था।

जो रिबका ने वह करने के लिए बड़े विश्वास और साहस की ज़रूरत है। वह न केवल अपना सब कुछ छोड़ने के लिए तैयार थी, परन्तु उसने यह बिना विलम्ब किए अलविदा कह दिया। यीशु के आरम्भिक शिष्यों ने भी उसे इसी तरह से अपना प्रत्युत्तर दिया थाः पतरस, आन्द्रियास, याकूब और यूहन्ना ने उसी घड़ी ग्रहण कर दिया जब यीशु ने उन्हें चुनौती दी, "मेरे पीछे चले आओ, तो मैं तुम को मनुष्यों के पकड़नेवाले बनाऊंगा" (मत्ती 4:19)। उन्होंने अपने कार्य और परिवार को यीशु की बुलाहट के प्रत्युत्तर में बहाना नहीं बनाया; इसके विपरीत, विवरण बताता है कि उन्होंने अपनी नाव और जाल तुरन्त छोड़े और यीशु के

पीछे हो लिए (मत्ती 4:20)।

तरसुस के शाऊल ने भी इसी तरह के निर्णय का सामना किया जब वह दमिश्क की राह पर यीशु से मिला। परमेश्वर ने उसे दास होने के लिए और यहूदियों और अन्य जातियों के लिए साक्षी होने के लिए बुलाया (प्रेरितों 26:15-18)। बाद में उसने इस बात पर ज़ोर दिया कि उसने कोई संकोच नहीं किया परन्तु उसने "उसी घड़ी" स्वर्गिक बुलाहट को उत्तर दिया (गला. 1:16, 17)। हर युग में लोग इसी तरह की परमेश्वर की चुनौती का सामना करते हैं जब वे परमेश्वर के उसके पास आने के लिए महान न्योते को सुनते हैं (मत्ती 11:28-30; प्रका. 22:17)। पौलुस ने कहा, "अभी वह प्रसन्नता का समय है" देखो, "अभी वह उद्धार का दिन है" (2 कुरि. 6:2)। सुसमाचार को उत्तर देने में विलम्ब करना हमेशा ही खतरनाक होता है क्योंकि सुविधाजनक समय कभी न आए (प्रेरितों. 24:24-27)।

समस्त मानव जाति को रिबका का हमेशा आभारी होना चाहिए, क्योंकि उसने दिव्य बुलाहट के प्रत्युत्तर में विश्वास का कदम उठाया। ऐसा करने से वह नई सारा बन गई, और उसका भावी पति नया अब्राहम बन गया। ये दोनों इस्राएली लोगों के पूर्वज ठहरे, जिनके द्वारा सबके लिए यीशु मसीह उद्धारकर्ता के रूप में जन्म होना था जिन्होंने उसकी सुसमाचार की बुलाहट का विश्वास और आज्ञाकारिता के साथ प्रत्युत्तर देना था। निस्संदेह इन घटनाओं को "समय पूरा होने पर" परम प्रतिज्ञा के अनुसार प्रकट होना था जो अब्राहम से की गई थी। (गला. 3:8, 9, 26-29; 4:3-5)।

समाप्ति नोट्स

[1]इब्रानी के जिस शब्द का अनुवाद "दास" (עֶבֶד, *एबेद)* किया गया है, उसका अर्थ "सेवक" भी है; परन्तु यह आवश्यक नहीं की उसके साथ कोई नकारात्मक अर्थ जुड़ा है। अक्सर दास प्राचीन घरानों के प्रिय और भरोसेमंद सदस्य होते थे। [2]जॉन इ. हार्टली, "יָרֵךְ," *थीओलोजिकल वर्डबुक ऑफ़ द ओल्ड टेस्टमेंट* में, एड. आर. लेयर्ड हैरिस, ग्लिसन एल. आर्चर, जूनियर., एंड ब्रूस के. वौल्की (शिकागो: मूडी प्रेस, 1980) (इससे आगे उद्धरण *TWOT),* 1:408. [3]"उसकी जन्म-भूमि" यह वाक्यखण्ड उभरता है अध्याय 11:28 में, अब्राहम के भाई हारान के विषय में, जो "कसदिया के ऊर" में मर गया था। [4]इब्रानी में इसके लिए शाब्दिक शब्द "आराम नाहारैम" (NIV; NRSV; NJPSV) या "दो नदियों का आराम" प्रयोग किया गया है। उत्तर पश्चिम मेसोपोटामिया का यह नगर संभवतः फरात नदी से लेकर हाबर नदी तक फैला था जो बालीह नदी के घाटी को घेरे था। [5]के. ए. किचन, *एनसिंट ओरिएंट एण्ड ओल्ड टेस्टामेंट* (शिकागोः इंटर-वारसिटि प्रेस, 1966), 79-80. [6]जूरिस जारिंस, में "कैमल," *दि एंकर बाइबल डिक्शनरी,* संपादक डेविड नोएल फ्रीडमैन (न्यू यॉर्कः डबलडे, 1992), 1:825-26. [7]कालांतर में याकूब का राहेल से कुएँ पर ही भेंट हुई (29:1-12) और मूसा का सिप्पोरा से भेंट भी कुएँ पर ही हुई थी (निर्गमन 2:15-21)। [8]इससे पहले कि गिदोन (न्यायियों 6:36-40) और योनातन (1 शमूएल 14:8-10) कोई कार्य करे, उन्होंने भी परमेश्वर से इसी प्रकार के चिह्न के लिए प्रार्थना किया। [9]ई. जेन्नी, "אוֹת," में *थियोलोजिकल लेक्शीकन आफ दि ओल्ड टेस्टामेंट;* अनुवादक मार्क ई. बिड्डुल, संपादक एर्नेष्ट जेनी और क्लाऊस वेस्टरमैन (पीबॉडी, मास्साचुसेट्सः हेंड्रीक्शन पब्लिशर्स, 1997), 1:26. [10]इसका यूनानी समक्ष के

लिए देखें यूहन्ना 4:11, जहाँ सामरी स्त्री ने यीशु को "प्रभु" (κύριε, *कुरिए)* करके संबोधित किया है। हालांकि, उसने यह तब किया जब उसने जाना कि वह एक रूढ़ीवादी यहूदी नहीं है।

[11]लाबान एक बहुदेववादी व्यक्ति था जिसके अपने "गृहदेवता" थे (31:19, 30)। संभवतः उसने परमेश्वर की भी उपासना की होगी, किंतु यह विचार विवादास्पद है (देखें 24:50, 51; 31:24, 49, 53)। [12]चूँकि 24:61 में रिबका के साथ कनान को जाने के लिए केवल दासियों का ज़िक्र है, हो सकता है लाबान के पास दास भी हों। [13]यह इस पर निर्भर करता है कि अब्राहम ने कतूरा से कब विवाह किया और कब उनके बच्चे पैदा हुए। यह सारे उपहार उस समय उनको नहीं दिया गया होगा जब दास रिबका के परिवार वालों से बात कर रहा था। [14]केनेथ ए. मैथ्यू, *जेनेसिस 11:27-50:26*, द न्यू अमेरिकन कमेंट्री, वोल्यूम 1B (नैशविलेः ब्राडमैन & हॉलमैन पब्लिशर्स, 2005), 341. [15]वाल्टर सी. कैसर, "מֹהַר," *TWOT* में, 1:492. शब्द מֹהַר का प्रयोग पुराना नियम में तीन स्थानों पर हुआ है (34:12; निर्गमन 22:16; 1 शमूएल 18:25), और ESV इसे लगातार "दहेज" के रूप में अनुवाद करता है। [16]मूसा की व्यवस्था के अंतर्गत, यदि कुँवारी को दूषित कर दिया जाता था तो दहेज का मूल्य 50 शकेल रखा गया था (व्यव. 22:29)। [17]गॉर्डन जे. वेनहाम, *जेनेसिस 16-50*, वर्ड बिबलिकल कमैंट्री, वाल. 2 (डलासः वर्ड बुक्स, 1994), 150. [18]जोहन ई. हार्टले, *जेनेसिस*, न्यू इंटरनेशनल बिबलिकल कमैंट्री (पीबॉडी, मास.: हेंड्रीक्सन पबलिशर्स, 2000), 227. [19]कैसर, "יָנַק," *TWOT* में, 1:383-84. यह יָנַק *(यनाक़)* क्रिया से लिया गया है, कृदंत מֵינֶקֶת *(मेयनेकेथ)* जो दूध पिलाने वाली दाई माँ को दर्शाता है (24:59; निर्गमन 2:7)। [20]यह "दासियाँ" (दास कन्याएँ) रिबका के सामाजिक स्तर का चिन्ह थे। उसी तरह से, राहेल और लिआ को बाद में दासियाँ दी गई जब उनका विवाह याकूब से हुआ था (29:24, 29)।

[21]*जेनेसिस रब्बाह* 60.14. [22]सारा की आयु 90 वर्ष की थी जब उसने इसहाक को जनम दिया था (17:17) और 127 वर्ष की आयु थी जब उसकी मृत्यु हुई (23:1), जिसका अर्थ है कि अपनी माँ की मृत्यु के समय इसहाक की आयु 37 वर्ष की थी और जब रिबका उसे उसका विवाह हुआ तब वह 40 वर्ष का था (25:20)। इसलिए जब इसहाक अपनी पत्नी को ब्याह कर अपनी माता के तम्बू में लाया तब तक सारा की मृत्यु हुए तीन वर्ष हो चुके थे। [23]इस भूमिका के लिए याकूब और और राहेल उल्लेखनीय अपवाद थे (29:18, 20, 30, 32)। [24]देखें प्रेरितों के काम 14:19, 20; 16:25, 26; 27:23, 24, 34-36; 2 कुरि. 1:8-11; 2 तीमु. 3:10, 11; 4:16-18.